टीएचडीसी

पहल

राजभाषा गृह पत्रिका

अंक : 34

जनवरी – जून, 2024

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड

THDC INDIA LIMITED

श्रीधर पाठक

(11 जनवरी, 1858 – 13 सितंबर, 1928)

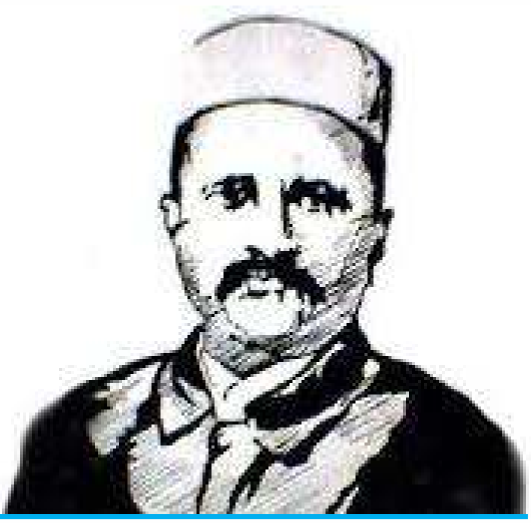

श्रीधर पाठक जी का जन्म उत्तर प्रदेश में जौधरी नामक गांव, तहसील–फिरोजाबाद, जिला–आगरा (वर्तमान में जिला फिरोजाबाद) में पंडित लीलाधर के घर हुआ। श्रीधर पाठक सनाढ्य ब्राह्मणों के उस परिवार में से थे, जो 8वीं शती में पंजाब के सिरसा से आकर आगरा जिले के जौधरी गांव में बसा था। एक सुसंस्कृत परिवार में पैदा होने के कारण आरंभ से ही इनकी रूचि विद्यार्जन में थी। छोटी अवस्था में ही इन्होंने घर पर संस्कृत और फारसी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। तदुपरांत औपचारिक रूप से विद्यालयी शिक्षा लेते हुए ये हिन्दी प्रवेशिका (1875) और 'अंग्रेजी मिडिल' (1879) परीक्षाओं में प्रथम रहे। फिर 'ऐंट्रेंस परीक्षा' (1880–81) में भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। उन दिनों भारत में ऐंट्रेंस तक की शिक्षा पर्याप्त उच्च मानी जाती थी। उनकी नियुक्ति राजकीय सेवा में हो गई। सर्वप्रथम उन्होंने जनगणना आयुक्त के रूप में कलकत्ता में कार्य किया। उन दिनों ब्रिटिश सरकार के अधिकांश केंद्रीय कार्यालय कलकत्ता में ही थे। जनगणना के संदर्भ में इन्हें भारत के कई नगरों में जाना पड़ा। इसी दौरान इन्होंने विभिन्न पर्वतीय प्रदेशों की यात्रा की तथा इन्हें निकट से प्रकृति–सौंदर्य देखने का अवसर मिला। कालांतर में उन्होंने अनेक अन्य कार्यालयों में भी कार्य किया, जिनमें रेलवे, पब्लिक वर्क्स तथा सिंचाई–विभाग आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। धीरे–धीरे ये अधीक्षक के पद पर पहुंचे। श्रीधर पाठक प्राकृतिक सौंदर्य, स्वदेश प्रेम तथा समाज सुधार की भावनाओं के हिंदी कवि थे। वे प्रकृति प्रेमी, सरल, उदार, नम्र, सहृदय, स्वच्छंद तथा विनोदी थे। वे हिंदी साहित्य सम्मेलन के पांचवें अधिवेशन (1915, लखनऊ) के सभापति हुए और 'कविभूषण' की उपाधि से भी विभूषित हुए। हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी पर उनका समान अधिकार था। 1914 में सेवानिवृत्त होने के बाद आप स्थायी रूप से प्रयाग में रहने लगे। यहीं सन् 1928 में इनका देहावसान हो गया।

प्रमुख रचनाएं:–

मनोविनोद (भाग–1,2,3), एकांतवासी योगी, जगत सच्चाई सार, धन विनय, गुनवंत हेमंत, वनाष्टक, देहरादून, गोखले गुनाष्टक, सांध्य अटन, बाल भूगोल, काश्मीर सुषमा, आराध्य शोकांजलि, जार्ज वंदना, भक्ति विभा, श्री गोखले प्रशस्ति, श्री गोपिका गीत, भारत गीत, तिलस्माती मुंदरी और विभिन्न स्फुट निबंध तथा पत्रादि।

अनुवाद:

एकांतवासी योगी 1886–गोल्डस्मिथ की रचना हरमिट का खड़ी बोली हिंदी में अनुवाद
उज्जड़ ग्राम 1889 – गोल्डस्मिथ के डेजर्टेड विलेज का ब्रज भाषा में अनुवाद
श्रांत पथिक 1902 – गोल्डस्मिथ के ट्रैवेलर का खड़ी बोली हिंदी में अनुवाद

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

"तमसो मा ज्योतिर्गमय" अर्थात अंधकार से प्रकाश की तरफ बढ़ो। साधारण भाषा में यह भी कह सकते हैं कि मुझे ज्ञान के प्रकाश पुंज की ओर ले चलो। इस प्रकाश पुंज को प्रज्ज्वलित करते हुए टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा गृह पत्रिका **"पहल"** विगत 12 वर्षों से इसी लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ रही है, जिसका प्रत्येक नवीन अंक नए कलेवर के साथ पहले से भी अधिक शिक्षाप्रद एवं पठनीय होता है। यह पत्रिका विविधतायुक्त ज्ञान की सामग्री का सुंदर गुलदस्ता है। अपने व्यावसायिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के साथ–साथ हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि हम भारत सरकार के द्वारा दिए गए प्रत्येक लक्ष्य को उत्कृष्टता के साथ पूरा करने का भरसक प्रयास करें। इसी क्रम में निगम में राजभाषा हिंदी को पूर्णतया स्थापित करने के लक्ष्य की ओर हम अपने कदम बढ़ा रहे हैं।

संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं, संभाषणों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, चर्चाओं एवं वार्ताओं में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि इनमें हिंदी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग हो। हमारा उद्देश्य केवल औपचारिकताओं को पूरा करना नहीं है अपितु हिंदी की प्रगति में सहायक बनते हुए राष्ट्र निर्माण में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देना है। भाषायी दृष्टिकोण से "क" क्षेत्र में होने के नाते राजभाषा के प्रचार–प्रसार की दिशा में हमारी जिम्मेदारी और जवाबदेही कहीं अधिक है।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा के क्षेत्र में समर्थता एवं सक्षमता के दृष्टिगत भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने निगम को हरिद्वार एवं टिहरी की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के संचालन का दायित्व भी सौंपा हैं। जिसका निर्वहन टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के द्वारा बखूबी किया जा रहा है। इन समितियों के सदस्य हरिद्वार एवं टिहरी में स्थित केंद्र सरकार के सभी संस्थान हैं, इसलिए हमारी जिम्मेदारी और भी अधिक बढ़ जाती है कि हम अपने संस्थान में राजभाषा का उत्कृष्ट कार्यान्वयन स्थापित कर सभी सदस्य संस्थानों के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें।

मैं इस पत्रिका को अपनी रचनाधर्मिता से सजाने व संवारने वाले सभी कर्मचारियों, संपादक मंडल एवं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मचारियों को बहुत–बहुत शुभकामनाएं देता हूं तथा इसके अनवरत प्रकाशन की कामना करता हूं।

जय हिंद...

(राजीव विश्नोई)

निदेशक (कार्मिक) का संदेश

प्रिय पाठकों,

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका **''पहल''** के इस 34वें अंक के माध्यम से संवाद करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड अपने व्यावसायिक कार्य के साथ–साथ अपने संवैधानिक एवं सांविधिक दायित्वों का निर्वाह भी बखूबी कर रही है। इसी क्रम में निगम में राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस पत्रिका के माध्यम से अभिव्यक्ति का सुदृढ़ मंच प्राप्त हुआ है। मैं टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अपने तकनीकी क्षेत्रों से जुड़े साथियों से अनुरोध करता हूं कि वे तकनीकी विषयों एवं विशेषत: अपने कार्यक्षेत्र से संबंधित आलेख प्रकाशन हेतु हिंदी अनुभाग को प्रेषित करें जिससे कि तकनीकी ज्ञान का भी अधिकाधिक प्रसार हो सके।

निगम में राजभाषा का कार्यान्वयन भारत सरकार की राजभाषा नीति ''प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना'' के अनुसार किया जा रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने की दृष्टि से विभिन्न स्तरों पर मॉनीटरिंग प्रणाली स्थापित की गई है। हाल ही में विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों के द्वारा निगम के कारपोरेट कार्यालय के साथ–साथ प्रमुख यूनिट/कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण किया गया। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि मंत्रालय के अधिकारियों ने सभी यूनिट/कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रशंसा की है।

विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य भी समय–समय पर हमारे कार्यालय में पधारकर हमारा मार्गदर्शन करते हैं। इनकी उपस्थिति में हिंदी संगोष्ठी, वार्ता एवं चर्चा सत्र का आयोजन किया जाता है। पिछले वर्ष श्री जी.के. फरलिया जी और हाल ही में डॉ यतीन्द्र कटारिया ''विद्यालंकार'' जी का आगमन हमारे कार्यालय में हुआ। उन्होंने निगम में राजभाषा कार्यान्वयन पर हमारे अधिकारियों के साथ चर्चा/वार्ता की और राजभाषा हिंदी की स्थिति की प्रशंसा करते हुए निगम को हिंदी सलाहकार समिति की ओर से उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रमाणपत्र भी प्रदान किया है। हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य श्री यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी जी भी अपने लेखों के माध्यम से इस पत्रिका में अपने ज्ञान को सभी पाठकों के साथ साझा करते हैं। मैं हिंदी सलाहकार समिति के सभी माननीय सदस्यों का उनके सहयोग के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका की परिकल्पना में अपना योगदान दिया है। हम इसी भाव से निरंतर राजभाषा हिंदी की सेवा करते रहें और देश की उन्नति में सहायक बनें।

जय हिंद...

(शैलेन्द्र सिंह)

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका (अंक-34)

मुख्य संरक्षक
श्री राजीव विश्नोई
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री शैलेन्द्र सिंह
निदेशक (कार्मिक)

मार्गदर्शक
श्री वीर सिंह
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)
श्री ईश्वर दत्त तिग्गा
अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

संपादक
श्री पंकज कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री टेलकीकर संतोष तुकाराम
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
श्री नरेश सिंह
सहायक अधिकारी (हिंदी)
श्रीमती हेमलता कौर
कनि. अधिकारी (हिंदी)

संपर्क सूत्र
संपादक
''पहल''
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम,
बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201, उत्तराखंड
दूरभाष : 0135–2473614
ई–मेलः pankajksharma@thdc.co.in

विषय सूची

लेख/प्रेरक प्रंसग/लघुकथा

1. भारत की राजभाषा हिंदी में लिपि विमर्श 4
2. आज़ादी के शंखनाद में हिंदी कवियों की भूमिका 9
3. $ 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था– प्रौद्योगिकी व राजभाषा 12
4. ''कंठस्थ 2.0–अनुवाद टूल'' 13
5. ग्रीन हाइड्रोजन – सतत ईंधन 14
6. हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 15
7. एथेंस का राजा–तिमन 16
8. पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 18
9. संचार और जनसंपर्क की भूमिका 19
10. ''हिंदी शब्द सिंधु– बृहत् शब्दकोश'' 20
11. ''बंटवारा मकान का'' 21
12. आइए! लखनऊ घूमते हैं! 22
13. हिंदी के प्रति राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचार... 23
14. ''बैटर ऑप्शन'' 24
15. एक राष्ट्र एक चुनाव 25
16. दिलचस्प तथ्य 26
17, नागराजा–पौराणिक महत्व 27
18. प्राणायाम के लाभ 28
19. वर्ष 2024–25 का वार्षिक कार्यक्रम 29

कविताएं/क्षणिकाएं/विचार

20. हिंदी हू मैं.../ रिटायरमेंट 31
21. मेरा सफर/ समर्पित अर्धांगिनियों का त्याग 32
22. बचपन की यादें/''राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना'' 33
23. टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की महत्ता/ई–लर्निंग कार्यकलाप 34

राजभाषा गतिविधियां

24. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन 35
25. विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों के द्वारा राजभाषा निरीक्षण 37
26. मासिक चल राजभाषा शील्ड से सम्मानित विभाग 39
27. हिंदी समन्वयकर्ता सम्मेलन का आयोजन 39
28. डॉ यतीन्द्र कटारिया का टीएचडीसी, ऋषिकेश का दौरा 40

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

तपस्या धर्म का पहला और आखिरी कदम है -महात्मा गांधी

भारत की राजभाषा हिंदी में लिपि विमर्श 'ध्वनि' और 'वर्ण' उत्पत्ति

लेख

यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी
सदस्य – हिंदी सलाहकार समिति,
केंद्रीय संस्कृति और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार
3/16, कबीर नगर, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी – 22100, उत्तर प्रदेश

विषय बोधक शब्द (कीवर्ड)

लिपि, ध्वनि, वाणी, लेखन, बोलना, समझना, लिखना, वांग्मय, नाद, भाषा, ब्राह्मी (देवनागरी हिंदी, गुजराती, बंगाली, मराठी, डोंगरी, पंजाबी) (द्रविड़ लिपि' तेलुगु और कन्नड़) 'ग्रंथ लिपि' तमिल और मलयालम, लिपि का इतिहास क्रम, क्रमशः ब्राह्मी लिपि, सैंधव लिपि, वैदिक संस्कृत, संस्कृत, ब्राह्मी, प्राकृत, पाली, खरोष्ठी, कुटीलाक्षय और फिर कैथी आदि लिपि, दक्खिनी, देवनागरी, राजभाषा। 51 शक्तिपीठ

'ध्वनि' और **'वर्ण'** दो अलग–अलग अवधारणाओं का एकीकरण ही भाषा की संरचना है। 'ध्वनि' भाषा की मौखिक (उच्चारित) रूप की और 'वर्ण' भाषा के लिखित रूप की लघुतम इकाई है। ध्वनियाँ मुख से बोली जाती हैं तथा कानों से सुनी जाती हैं जबकि 'वर्ण' हाथ से कलम द्वारा (या यंत्र से) लिखे जाते हैं तथा आँखों से देखकर पढ़े जाते हैं। ध्वनि तथा वर्ण भाषा की अभिव्यक्ति के दो अलग–अलग साधन और दोनों की अलग–अलग व्यवस्थाएं होकर भी हिंदी के लगभग सभी व्याकरणों में इनका विवेचन एक साथ किया जाता है। पंडित कामता प्रसाद गुरु अपने 'हिंदी व्याकरण' की प्रस्तावना में वर्ण का परिचय देते हुए लिखते हैं– 'लिखी हुई भाषा में शब्द की एक–एक मूल ध्वनि को पहचानने के लिए एक–एक चिह्न नियत कर लिया जाता है, उसे वर्ण कहते हैं। वर्ण उस ध्वनि को कहते हैं, जिसके खंड नहीं हो सकते। ध्वनि कानों का विषय है, पर वर्ण आँखों का और ध्वनि का प्रतिनिधि है।'

हिंदी में जो हम ध्वनि के साथ बोलते हैं, वही लिखते भी हैं। उदाहरण जो हम बोलते हैं, वह भी 'क' है तथा जो लिखते हैं वह भी 'क' है। इसे हम रोमन वर्ण तथा अंग्रेजी की ध्वनि के माध्यम से समझ सकते हैं। अंग्रेजी की एक ध्वनि है 'क'। 'क' ध्वनि को लिखने के लिए जिस वर्ण का उपयोग किया जाता है, उसका नाम है 'के'(K)। यानी कि ध्वनि और वर्ण के नाम एक नहीं, ध्वनि का नाम 'क' तथा वर्ण का नाम 'के'।

हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह अनुनासिक, अनुस्वार और विसर्ग चिह्नों के प्रयोग के साथ सर्वाधिक

वैज्ञानिक भाषा बन जाती है। इसमें लेखन और उच्चारण में बहुत अधिक शुद्धता और समानता मौजूद है।

बीसवीं सदी में जब हिंदी ने यूरोपीय और अरबी–फारसी भाषाओं से शब्द अपनाए तो इसके लिए नए चिह्न भी ग्रहण किए। जैसे 'डॉक्टर' शब्द अंग्रेजी से आया है, इसका पहला स्वर है– 'ऑ'। चूंकि हिंदी में यह स्वर उपलब्ध नहीं था, यहाँ 'आ' तो था य 'ऑ' नहीं था, इसलिए हिंदी में अंग्रेजी से आए ऐसे शब्दों के उच्चारण के लिए 'ऑ' चिह्न को अपना लिया गया। इसी प्रकार अरबी–फारसी के कुछ शब्दों के सटीक उच्चारण के लिए हिंदी ने पाँच नई ध्वनियाँ अपनाई– ़क, ़ख, ़ग, ़ज, ़फ। जाहिर है, इससे हिंदी की शब्द–सम्पदा तो बढ़ी ही, इसमें भावों को और अधिक सूक्ष्मता तथा स्पष्टता से अभिव्यक्त करने की शक्ति भी आई।

हिंदी की ध्वनियाँ

स्वरः अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ल, ए, ऐ, आ, औ, अं, अः। 16

व्यंजनः क, ख, ग, घ, ङ
च, छ, ज, झ, ञ (वर्गीय ध्वनियाँ)
ट, ठ, ड, ढ़, ण स्पर्श
त, थ, द, ध, न
प, फ, ब, भ, म
य, र, ल, व अंतस्थ
श, ष, स, ह ऊष्म
क्ष, त्र, ज्ञ

संयुक्ताक्षर कंठ्य ध्वनियाँ: इस वर्ग की सभी ध्वनियों का उच्चारण कण्ठ से होता है। इस वर्ग की ध्वनियाँ हैं– अ, आ (स्वर); क, ख, ग, घ, ङ (व्यंजन)।

तालव्य ध्वनियाँ : जिस ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग तालु से स्पर्श करता है, उन्हें तालव्य कहते हैं। इ, ई (स्वर); च, छ, ज, झ, ञ, श, य (व्यंजन)।

मूर्द्धन्य ध्वनियाँ : इसके अन्तर्गत वे ध्वनियाँ रखी गई हैं, जिनका उच्चारण मुर्द्धा से होता है, जैसे– ट, ठ, ड, ढ़, ण, ष (सभी व्यंजन ध्वनियाँ)।

दन्त्य ध्वनियाँ: त, थ, द, ध, न, र, ल, स, क्ष (सभी व्यंजन ध्वनियाँ)।

ओष्ठ्य ध्वनियाँ : जो ध्वनियाँ दोनों होंठों के स्पर्श से उत्पन्न होती है, उन्हें ओष्ठ्य कहते हैं। हिंदी में प, फ, ब, भ, म ध्वनियाँ ओष्ठ्य हैं।

अनुनासिक ध्वनियाँ : इन ध्वनियों का उच्चारण मुँह और नाक दोनों के सहयोग से होता है। इनके उच्चारण के दौरान कुछ वायु नाक से निकलते हुए एक अनुगूंज–सी पैदा करती है। हिंदी की व्यंजन ध्वनियों का प्रत्येक वर्ग पाँच वर्णों का है, जो एक ही स्थान से उच्चारित होते हैं,

जैसे–क, ख, ग, घ, ङ या
च, छ, ज, झ, ञ या
ट, ठ, ड, ढ़, ण या
त, थ, द, ध, न अथवा
प, फ, ब, भ, म।

इनके प्रत्येक वर्ग की अंतिम ध्वनि अर्थात ङ, ञ, ण, न और म अनुनासिक ध्वनि है। देवनागरी लिपि में अनुनासिकता को चन्द्रबिंदु (ँ) द्वारा व्यक्त किया जाता है। किन्तु जब स्वर के ऊपर मात्रा हो तो चन्द्रबिन्दु के स्थान पर केवल बिंदु (ं) लगाया जाता है, जैसे– अँ, ऊँ,ऐं, ओं आदि। अनुस्वार भी इसी के अंतर्गत आते हैं।

दन्त्योष्ठ्य ध्वनियाँ : जिन व्यंजनों का उच्चारण दन्त और ओष्ठ की सहायता से होता है, उन्हें दन्त्योष्ठ्य व्यंजन ध्वनियाँ कहते हैं। जैसे– फ, व।

कंठ-तालव्य ध्वनियाँ : इसमें वे दो स्वर ध्वनियाँ आती हैं, जिनका उच्चारण कंठ और तालु के सहयोग से होता है। जैसे–ए और ऐ।

कंठोष्ठ्य ध्वनियाँ : इन ध्वनियों का जन्म कंठ और ओष्ठों के सहयोग से होता है; जैसे ओ और औ।

जिह्वामूलक ध्वनियाँ : अरबी–फारसी से हिंदी में अपनाई गई तीन ध्वनियों का उच्चारण जिह्वा के बिल्कुल पीछे के भाग (मूल) से होता है। ये हैं– ़क, ़ख और ़ग।

वर्त्स्य ध्वनियाँ : इसके अंतर्गत अरबी–फारसी की ़ज और ़फ की ध्वनि आती है।

काकल्य : जिन व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में मुखगुहा खुली रहती है और वायु बंद कंठ को खोलकर झटके से बाहर निकल पड़ती है उसे काकल्य व्यंजन ध्वनियाँ कहते हैं। जैसे हिंदी में 'ह'। यह ध्वनि हिंदी में स्वरों की तरह ही बिना किसी अवरोध के उच्चारित होती हैं। हिंदी में 'ह' महाप्राण अघोष ध्वनि है।

क्ष त्र ज्ञ श्र हिंदी व्याकरण की किताबों में **क्ष त्र ज्ञ** ये तीन व्यंजन वर्ण वर्णमाला के अंत में अनिवार्य रूप से दिए गए होते हैं। कुछ व्याकरण लेखक इनके साथ श्र को भी जोड़ देते हैं। इन चार वर्णों पर विचार होना चाहिए। व्याकरण की किताबों में इन वर्णों को संयुक्त वर्ण कहा जाता है। इनमें दो यानी **क्ष** तथा **ज्ञ** एकल (सिंगल या सिंपल) वर्ण हैं तथा बाकी के दो यानी **त्र** तथा **श्र** संयुक्त वर्ण हैं। संयुक्त वर्ण उन वर्णों को कहते हैं जो दो वर्णों की आकृतियों के अंशों को लेकर बने होते हैं। उनकी अपनी कोई स्वतंत्र आकृति नहीं होती। **त्र** संयुक्त वर्ण **त** तथा **र** वर्णों की आकृतियों के अंशों को लेकर बना है। **श्र** संयुक्त वर्ण **श** तथा **र** की आकृतियों के अंशों को लेकर बना है। परंतु क्ष तथा ज्ञ वर्णों में किन्ही दो व्यंजन वर्णों की आकृतियों के अंश नहीं हैं। इसलिए ये एकल वर्ण हैं। आप कहेंगे – **क्ष** में **क** तथा **ष** वर्ण हैं। **ज्ञ** में **ज** तथ **ञ** वर्ण हैं। ऐसा नहीं है। यही तो समझना है। यह कठिनाई/उलझन ध्वनि तथा वर्ण को एक मान लेने के कारण है। ध्वनि तथा वर्ण दो अलग–अलग अवधारणाएँ हैं। ध्वनि मौखिक भाषा की सबसे छोटी इकाई है तथा वर्ण लिखित भाषा की सबसे छोटी इकाई है।

त्र तथा **श्र** संयुक्त व्यंजन ध्वनि तथा संयुक्त व्यंजन वर्ण दोनों हैं। संयुक्त व्यंजन वर्ण के रूप में **त्र** में **त** तथा **र** दोनों वर्णों की आकृतियों के अंश हैं तथा संयुक्त व्यंजन ध्वनि के रूप में **त्र** में **त** तथा **र** दोनों व्यंजन ध्वनियों का एक साथ उच्चारण होता है। ऐसा ही **श्र** के संबंध में भी समझना चाहिए। परंतु **क्ष** तथ **ज्ञ** में दो व्यंजन वर्णों की आकृतियों के अंश नहीं हैं। ये एकल वर्ण हैं अर्थात ये दोनों संयुक्त व्यंजन ध्वनियां हैं, परंतु संयुक्त व्यंजन वर्ण नहीं हैं। इन दोनों एकल वर्णों का उच्चारण संयुक्त व्यंजन के रूप में होता है।

जैसे अंग्रेजी में (X) एक यानी सिंगल वर्ण है। परंतु इसका उच्चारण संयुक्त व्यंजन (क्स) के रूप में होता है। वर्णमाला

के सभी वर्ण एकल (सिंगल) वर्ण होते हैं। इसलिए **त्र** तथा **श्र** वर्णमाला में नहीं रखे जा सकते। अगर ऐसा होने लगे तो सभी संयुक्त वर्ण वर्णमाला में आ जाएंगे। **त्र** तथा **श्र** यदि वर्णमाला में आएँगे, तो **द्र, प्र, म्र स्र** आदि क्यों नहीं?

यही 51 वर्णों की वर्णमाला है। यहाँ अन्तकाल **'ह'** रूप से उच्चारित होता है तथा अंतिम **'क्ष'** माला का सुमेरु है। यह 51 वर्णों की वर्णमाला भारत के बीजाक्षर हैं। पौराणिक उल्लेख के अनुसार, माता सती के पिता दक्ष प्रजापति ने कनखल नामक स्थान, जिसे अद्यतन हरिद्वार के नाम से जाना जाता है, वहाँ एक महायज्ञ किया। उस यज्ञ में ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र आदि सभी देवी–देवताओं को बुलाया गया लेकिन भगवान शिव को आमंत्रित नहीं किया गया। माता सती को जब यह जानकारी मिली तब पति को यज्ञ में आमंत्रित न करने का जवाब जानने के लिए वो पिता दक्ष के पास पहुँची। माता सती ने अपने पिता से जब यह सवाल किया तो उन्होंने भगवान शिव के लिए अपशब्द कह, उनका अपमान किया। माता सती ने अपमान से क्षुब्ध होकर उसी यज्ञ के अग्निकुंड में अपने प्राणों की आहुति दे दी। भगवान शिव को जानकारी मिलने पर वे क्रोधित हो उठे और उनका तीसरा नेत्र खुल गया। वह तांडव नृत्य करते उस स्थान पर गए, जहाँ माता सती का शरीर था। उन्होंने माता सती का शरीर उठाया और कंधे पर रखकर तांडव करते हुए कैलाश की ओर रुख किया। पृथ्वी पर बढ़ते प्रलय का खतरा देखते हुए भगवान विष्णु ने अपना सुदर्शन चक्र चलाकर माता सती के शरीर को खंड–खंड कर दिया। माता सती के शरीर के अलग–अलग हिस्से पृथक टुकड़ों में अलग–अलग स्थानों पर गिरे। ऐसा 51 बार हुआ, और जहाँ–जहाँ एक टुकड़ा गिरा, वहाँ–वहाँ एक मंदिर, एक तीर्थ बना, वह स्थान हमारे 51 शक्तिपीठ हो गए। सनातन धर्म में शक्तिपीठ का विशेष महत्व है। हर शक्तिपीठ की अपनी एक कहानी है। देवी पुराण में 51 शक्तिपीठों का उल्लेख किया गया है। इसमें से 42 शक्तिपीठ भारत में हैं, 4 बांग्लादेश में हैं, 2 नेपाल में हैं और 1 श्रीलंका, 1 पाकिस्तान और 1 तिब्बत में हैं। पृथक–पृथक वर्णों की शक्तियाँ और विग्रह भिन्न हैं। इसीलिए उन–उन वर्णों, शक्तियों एवं विग्रहों का परस्पर संबंध है। यह ही 51 पीठ हुए। हृदय से ऊर्ध्वभाग के अंग जहाँ पतित हुए, वहाँ वैदिक एवं दक्षिण मार्ग की सिद्धि होती है और हृदय से निम्नभाग के अंगों के पतन स्थलों में वाममार्ग की सिद्धि होती है।

वर्ण उत्पत्ति स्थल

1. **'अकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती की योनि का पात हुआ, वहाँ कामरूप नामक पीठ हुआ। श्रीविद्या से अधिष्ठित यहाँ कौलशास्त्र से अणिमादि सिद्धियाँ सिद्ध होती हैं। लोम से उत्पन्न इसके वंश नामक दो उपपीठ हैं, वहाँ शाबर मन्त्रों की सिद्धि होती है।
2. **'आकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के स्तनों का पतन हुआ, उस स्थल पर काशी पीठ हुआ जहाँ देहत्याग करने से मुक्ति प्राप्त होती है। सती के स्तनों से दो धाराएँ निकलीं, वही असी और वरुणा नदी हुई। असी के तीर पर दक्षिण सारनाथ उपपीठ है एवं वरुणा के उत्तर में उत्तर सारनाथ उपपीठ है, वहाँ क्रमशः दक्षिण एवं उत्तर मार्ग के मन्त्रों की सिद्धि होती है।
3. **'इकार'** की उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के गुह्यभाग का पतन हुआ, वहाँ नेपाल पीठ हुआ। वह पीठ वाममार्ग का मूलस्थान है। वहाँ 56 लाख भैरव–भैरवी, दो हजार शक्तियाँ, तीन सौ पीठ एवं चौदह शमशान सन्निहित हैं। वहाँ चार पीठ दक्षिण मार्ग के सिद्धिदायक हैं, उनमें भी चार में वैदिक मन्त्र सिद्ध होते हैं। नेपाल से पूर्व में मल का पतन हुआ अतः वहाँ किरातों का निवास है। तीस हजार देवयोनियों का वहाँ निवास है।
4. **'ईकार'** की उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के वाम नेत्र का पतन हुआ, वहां रौद्र पर्वत है, वह महत्पीठ हुआ। वामाचार से वहाँ मन्त्रसिद्धि होकर देवता का दर्शन होता है।
5. **'उकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के वाम कर्ण का पतन हुआ, वहां काश्मीर पीठ हुआ। वहाँ सर्वविध मन्त्रों की सिद्धि होती है। वहाँ अनेक अद्भुत तीर्थ हैं किन्तु कलि में सब म्लेच्छों द्वारा आवृत कर दिये जायेंगे।
6. **'ऊकार'** की उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के दक्षिण कर्ण का पतन हुआ, वहां कान्यकुब्जपीठ हुआ। जहाँ गंगा–यमुना के मध्य में अन्तर्वेदी नामक पवित्र स्थल में ब्रह्मादि देवों ने स्वस्वतीर्थों का निर्माण किया है। वहाँ वैदिक मन्त्रों की सिद्धि होती है। उस कर्ण के मल के पतन स्थान में यमुना तट पर इन्द्रप्रस्थ नामक उपपीठ हुआ, उसके प्रभाव से विस्मृत वेद ब्रह्मा को वहाँ पुनः उपलब्ध हुए।
7. **'ऋकार'** का उत्पत्ति स्थल, जहाँ सती के नासिका का पतन हुआ, वहाँ पूर्ण गिरिपीठ है। वहाँ योगसिद्धि होती है और मन्त्राधिष्ठातृ देव प्रत्यक्ष दर्शन देते हैं।
8. **'ॠकार'** का उत्पत्ति स्थल, जहाँ सती के वाम गण्डस्थल का पतन हुआ, वहाँ अर्बुदाचल पीठ है। वहाँ अम्बिका नाम की शक्ति है, वाममार्ग की सिद्धि होती है, दक्षिण मार्ग में विघ्न होते हैं।

9. **'लृकार'** का उत्पत्ति स्थल, जहाँ सती के दक्षिण गण्डस्थल का पतन हुआ, वहाँ आम्रातकेश्वर पीठ है। वह धनदादि यक्षिणियों का निवास स्थान है।

10. **'लृकार'** का उत्पत्ति स्थल, जहाँ सती के नखों का पतन हुआ, वहाँ एकाभ्रपीठ पीठ है। वह पीठ विद्याप्रदायक है।

11. **'एकार'** का उत्पत्ति स्थल, जहाँ सती के त्रिवलि का पतन हुआ, वहाँ त्रिस्त्रोत पीठ है। वस्त्र के तीन खण्ड उसके पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण में गिरे, वे तीन उपपीठ हुए। गृहस्थ द्विज को पौष्टिक मन्त्रों की सिद्धि वहाँ होती है।

12. **'ऐकार'** का उत्पत्ति स्थल, जहाँ सती के नाभि का पतन हुआ, वहाँ कामकोटि पीठ है। समस्त काममन्त्रों की सिद्धि वहाँ होती है, उसकी चारों दिशाओं में उपपीठ है जहाँ अप्सराएँ निवास करती है।

13. **'ओकार'** का उत्पत्ति स्थल, जहाँ सती के अंगुलियों का पतन हुआ, वहाँ हिमालय पर्वत में कैलाश पीठ है। अंगुलियाँ लिंगरूप में प्रतिष्ठित हुईं, वहाँ करमाला से मन्त्र जप करने पर तत्क्षण सिद्धि होती है।

14. **'औकार'** का उत्पत्ति स्थल, जहाँ सती के दन्तों का पतन हुआ, वहाँ भृगु पीठ है। वैदिकादि मन्त्र वहाँ सिद्धि होते हैं।

15. **'अं'** का उत्पत्ति स्थल, जहाँ सती के दक्षिण करतल का पतन हुआ, वहाँ केदार पीठ है। उसके दक्षिण में कंकण के पतन स्थान में अगस्त्याश्रम नामक सिद्ध उपपीठ हुआ और उसके पश्चिम में मुद्रिका के पतन स्थल में इन्द्राक्षी उपपीठ हुआ। उसके पश्चिम में वलय के पतन स्थल में रेवती–तट पर राजेश्वरी उपपीठ हुआ।

16. **'अरू'** का उत्पत्ति स्थल, जहाँ सती के वाभ गण्ड का पतन हुआ, वहाँ चन्द्रपुर पीठ है। सभी मन्त्र वहाँ सिद्ध होते हैं।

17. **'ककार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के मस्तक का पात हुआ, वहाँ श्रीपीठ हुआ। उसके पूर्व में कर्णाभरण के पतन से उपपीठ हुआ, जहाँ ब्रह्मविद्या–प्रकाशिका ब्राह्मी शक्ति का निवास है। उससे अग्निकोण में कर्णाद्धभिरण के पतन से दूसरा उपपीठ हुआ, जहाँ मुखशुद्धकरी माहेश्वरी शक्ति है। दक्षिण में पत्रवल्ली की पातभूमि में कौमारी शक्तियुक्त तीसरा उपपीठ हुआ। नैर्ऋत्य में कष्ठमाल के निपात स्थल में ऐन्द्रजाल विद्या–सिद्धिप्रद वैष्णवी शक्ति समन्वित चौथा उपपीठ हुआ। पश्चिम में नासा–मौक्तिक के पतनस्थान में वाराही शत्तक्त्यधिष्ठित पाँचवाँ उपपीठ हुआ। वायुकोण में मस्तकाभरण के पतनस्थान में चामुण्डा शक्ति–युक्त क्षुद्रदेवता–सिद्धिकर छठा उपपीठ हुआ और ईशान में केशाभरण के पतन से महालक्ष्मी से अधिष्ठित सातवाँ उपपीठ हुआ।

18. **'खकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के बाहु का पात हुआ, वहाँ अमरकण्टक पर्वत पर ओंकारक्षेत्र पीठ हुआ। वह पीठ नर्मदा से अधिष्ठित है। उसके उत्तर में कंचुकी की पतनभूमि में उपपीठ हुआ, जो ज्योतिर्मन्त्र–प्रकाशक एवं ज्योतिष्मती से अधिष्ठित है।

19. **'गकार'** स्थल का पात हुआ, वहाँ भी एक पीठ हुआ। अग्नि ने वहाँ तपस्या की और देवमुखत्त्व को प्राप्त होकर ज्वालामुखी संज्ञक उपपीठ में स्थित हुई।

20. **'घकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के वामस्कन्ध का पात हुआ, वहाँ मालवपीठ हुआ। गन्धर्वों ने रागज्ञान के लिये तपस्या कर वहाँ सिद्धि पायी।

21. **'ङकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के दक्षिण कक्ष का पात हुआ, वहाँ कुलान्तक पीठ हुआ। विद्वेषण, उच्चाटन, मारण के प्रयोग वहाँ सिद्ध होते हैं।

22. **'चकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के वाम कक्ष का पात हुआ, वहाँ कोट्टक पीठ हुआ। वहाँ राक्षसों ने सिद्धि प्राप्त की है।

23. **'छकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के जठरदेश का पात हुआ, वहाँ गोकर्ण पीठ हुआ।

24. **'जकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के प्रथम वलिका का पात हुआ, वहाँ मातुरेश्वर पीठ हुआ। वहाँ शैवमन्त्र शीघ्र सिद्ध होते हैं।

25. **'झकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के अपर वलि का पात हुआ, वहाँ अट्टाहास पीठ हुआ। वहाँ गणेश–मन्त्रों की सिद्धि होती है।

26. 'ञकार' का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के तीसरी वलिका का पात हुआ, वहाँ विरज पीठ हुआ। वह पीठ विष्णु–मन्त्रों का सिद्धि प्रदायक है।

27. **'टकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के बस्तिपात का पात हुआ, वहाँ राजगृह पीठ हुआ। राजगृह में वेदार्थज्ञान की प्राप्ति होती है। नीचे क्षुद्रघण्टिका के पतनस्थल में घण्टिका नामक उपपीठ हुआ, वहाँ ऐन्द्रजालिक मन्त्र सिद्ध होते हैं।

28. **'ठकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के नितम्ब का पात हुआ, वहाँ महापथ पीठ हुआ।

29. **'डकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के जघन का पात हुआ, वहाँ कौछगिरि पीठ हुआ। वन देवताओं के मन्त्रों को वहाँ सिद्धि शीघ्र होती है।

30. **'ढ़कार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के दक्षिण ऊरु का पात हुआ, वहाँ एलापुर पीठ हुआ।

31. **'णकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के वाम ऊरु का पात हुआ, वहाँ कालेश्वर पीठ हुआ। वहाँ आयुवृद्धिकारक मृत्युंजयादि मन्त्र सिद्ध होते हैं।

32. **'तकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के दक्षिण जानु का पात हुआ, वहाँ जयन्ती पीठ हुआ। वहाँ धनुर्वेद की सिद्धि अवश्य होती है।

33. **'थकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के वाम जानु का पात हुआ, वहाँ उज्जयिनी पीठ हुआ। वहाँ कवचमन्त्रों की सिद्धि होकर रक्षण होता है। अतः उसका नाम 'अवन्ती' है।

34. **'दकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के दक्षिण जंघा का पात हुआ, वहाँ योगिनी पीठ हुआ। वहाँ कौलिक मन्त्रों की सिद्धि होती है।

35. **'धकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के वाम जंघा का पात हुआ, वहाँ क्षीरिका पीठ हुआ। वहाँ वैतालिक तथा शाबर मन्त्र सिद्ध होते हैं।

36. **'नकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के दक्षिण गुल्फ का पात हुआ, वहाँ हस्तिनापुर पीठ हुआ। वहीं नूपुर का पतन होने से नूपुरार्णवसंज्ञक उपपीठ हुआ, वहाँ सूर्य–मन्त्रों की सिद्धि होती है।

37. **'पकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के वामगुल्फ का पात हुआ, वहाँ उड्डीश पीठ हुआ। उड्डीशाख्य महातन्त्र वहाँ सिद्ध होता है। जहाँ दूसरे नूपुर का पतन हुआ, वहाँ डामर उपपीठ हुआ।

38. **'फकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के देहरस (अस्थि) का पात हुआ, वहाँ प्रयाग पीठ हुआ। वहाँ मृत्तिका श्वेतवर्ण की दृष्टिगोचर होती है। वहाँ अन्याय अस्थियों का पतन होने से अनेक उपपीठों का प्रादुर्भाव हुआ। गंगा के पूर्व में बगलोपपीठ एवं उत्तर में चामुण्डादि उपपीठ, गंगा–यमुना के मध्य में राज–राजेश्वरीसंज्ञक, यमुना के दक्षिण तट पर भुवनेशी नामक उपपीठ हुआ। इसीलिए प्रयाग तीर्थराज एवं पीठराज कहा गया है।

39. **'बकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के दक्षिण पृश्नि का पात हुआ, वहाँ षष्ठीश पीठ हुआ। यहाँ पादुका मन्त्र की सिद्धि होती है।

40. **'भकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के वामपृश्नि का पात हुआ, वहाँ मायापुर पीठ हुआ। समस्त मायाओं की सिद्धि वहाँ होती है

41. **'मकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के रक्त का पात हुआ, वहाँ मलय पीठ हुआ। रक्ताम्बररादि बौद्धों के मन्त्र यहाँ सिद्ध होते हैं।

42. **'यकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के पित्त का पात हुआ, वहाँ श्रीशैल पीठ हुआ। विशेषतः वैष्णव मन्त्र यहाँ सिद्ध होते हैं।

43. **'र'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के मेद का पात हुआ, वहाँ हिमालय पर मेरु पीठ हुआ। स्वर्णाकर्षण भैरव की सिद्धि वहाँ होती है।

44. **'लकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के जिह्वाग्र का पात हुआ, वहाँ गिरि पीठ हुआ। यहाँ जप करने से वाकसिद्धि होती है।

45. **'वकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के मज्जा का पात हुआ, वहाँ माहेन्द्र पीठ हुआ। जहाँ शाक्त मन्त्रों के जप से अवश्य सिद्धि होती है।

46. **'शकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के दक्षिण अंगुष्ठ का पात हुआ, वहाँ कामन पीठ हुआ। यहाँ समस्त मन्त्रों की सिद्धि होती है।

47. **'शकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के वामांगुष्ठ का पात हुआ, वहाँ हिरण्यपुर पीठ हुआ। वहाँ वाममार्ग से सिद्धिलाभ होता है।

48. **'सकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के रुचि (शोभा) का पात हुआ, वहाँ महालक्ष्मी पीठ हुआ। यहाँ सर्वसिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

49. **'हकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के धमनी का पात हुआ, वहाँ अत्रि पीठ हुआ। वहाँ यावत् सिद्धियाँ होती हैं।

50. **'लकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के छाया का सम्पात हुआ, वहाँ छाया पीठ हुआ।

51. **'क्षकार'** का उत्पत्ति स्थान, जहाँ सती के केशपाश का पात हुआ, वहाँ क्षत्र पीठ हुआ। यहाँ समस्त सिद्धियाँ शीघ्रतापूर्वक उपलब्ध होती हैं।

भिन्न–भिन्न वर्णों की शक्तियाँ और देवता भिन्न हैं। इसीलिए उन–उन वर्णों, पीठों, शक्तियों एवं देवताओं का परस्पर सम्बन्ध है। जिसके ज्ञान और अनुष्ठान साधना का विषय है।

आज़ादी के शंखनाद में हिंदी कवियों की भूमिका

लेख

हिमांशी अग्निहोत्री
(शोध छात्रा), ए–305 ओसीआर बिल्डिंग, विधानसभा मार्ग लखनऊ

अंग्रेजों ने भारत पर 350 वर्षों तक शासन किया। 1857 में स्वतंत्रता की क्रांति के शंखनाद के समय वीरांगना दुर्गावती के वंशज राजा शंकर शाह को जब अंग्रेजों ने विद्रोह के बाद गिरफ्तार किया तो राजा के निवास पर तलाशी में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ विद्रोह करने की भावना व्यक्त करने वाले दस्तावेज में राजा शंकर शाह द्वारा लिखित एक प्रार्थना पत्र भी अंग्रेजों को मिला जिसमें देवी से याचना की गयी थी कि देवी जी अंग्रेजों का खात्मा करने में सहायता करें। यह हिंदी का पहला गीत या काव्य है जो अंग्रेजों को भारत भूमि में भस्म कर सकने के लिए लिखा गया था। यह हिंदी की स्वतंत्रता संग्राम की अलख जगाने वाली प्रार्थना है जो इस प्रकार लिखी थीः–

मूँद मुख डंडिन को, चुगलौ को चबाई खाई
खूंद डार दुष्टन कों शत्रु-संहारिका
मार अंगरेज, रेज कर दे मात चण्डी
बचे नहिं बैरी बाल-बच्चे संहारिका।।

संकर की रक्षा कर, दास प्रतिपाल कर
दीन की पुकार सुन, अय मात कालका
खाई ले मलेछन कों, देर नहीं करौ मात
भच्छन कर तत्छन, घोर मात कालिका।।

इस गीत के लिखने वाले शंकर शाह को उनके पुत्र सहित तोपों के मुंह से बांधकर अंग्रेजों ने शहीद किया था। तबसे नव जागरण में हिन्दी साहित्यकारों, कवि, लेखक, पत्रकारों ने अंग्रेजी शासन के दुराचार, अन्याय, विदेशी वस्तुओं का विरोध, चरखा के माध्यम से स्वदेशी और देशप्रेम की भावना जगाने तथा देश के लिए बलिदान एवं त्याग के लिए प्रेरित किया। लाखों लोगों ने देश को स्वतंत्र कराने हेतु अपना बलिदान दिया। लोक में प्रचलित लोक गाथाएँ, लोकगीतों में हमारे वीर बलिदानी पूर्वजों का इतिहास भरा पड़ा है। लोककवि और लोकगायकों, बसुदेवा ने इकतारे और खँजड़ी पर गाँव–गाँव जाकर जन के मन में अंग्रेजी राज के दमन चक्र और सोने की चिड़िया भारत की संपदा को लूटने के किस्से, गीतों, लोक आख्यान के रूप में सुनाकर अंग्रेजों को सबक सिखाने हेतु संगठित होने का संदेश दिया। रानी लक्ष्मीबाई के साथ अपने राज्य को दांव पर लगाने वाले महाराजा मर्दन सिंह की वीरता का वर्णन करता है–

आँखें मिच-मिच जाँय उनकी मर्दन सिंह की सुन ललकार।
नीली पीली आँखे फारें ऊपर उड़ गये भूरावार,
दो-दो हाथ चले वीरन के, आड़े हो गये पाँव पसार।।

बुन्देलखण्ड में यह लोकगीत प्रथम आत्म बलिदानी राव बखत सिंह की वीरता का गान करता है।

''गोरन ने मोरन पै गोली चलाई, उने निठुँअई नई भाई''
मोर-मार कै नैचे डारी, देख दुखी भओ मन में भारी।

बुन्देल खंडियों की झलक इस लोकगीत में प्रति ध्वनित होती है। **दुकत फिरतते गोरा नाँमाँ, सुन-सुन कै हुंकारैं। बुन्देलन की गौरन पै फिर, बजन लगी तरवारैं।** ब्रज में टेसू गीतों से स्वतंत्रता का संदेश घर–घर भेजा गया। –**मारा है जी मारा है, जा दिल्ली पछाड़ा है, दिल्ली में बैठा गोरा चोर, ब्रज से ललकारा है।**

19वीं सदी में जब हिंदी एकरूपता में आकार ले रही थी तब भारत की आजादी में हिंदी कविताओं में सुराज की चाह जगाने में महत्वपूर्ण कविता **''रोवअहु सब मिली आवहु भारत भाई हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई''** भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखी इस कविता को अंग्रेजों के राज्य में भारत की सामाजिक आर्थिक समस्याओं का चित्रण कर स्वतंत्रता का अर्थ समझाने का प्रयत्न किया गया था। भारतेन्दु युगीन काव्यधारा में कवि भारत माँ के दुख एवं विवशता देखकर दुखी है, लेकिन अपनी व्याकुलता व्यक्त करने के अलावा कुछ कर नहीं सकता–

क्यों माता मुख मलिन, हवै रही जिय मैं कहा उदासी।
क्यों घर छाँड़ि त्यागि आभूषण बैठी हैव वनवासी।...
धूरि भरी तव अलक देखि कै मेरो जिय अकुलाई।
छत्र चँवर नित ढुरत जौन मुख तहँ मनु छुटत हवाई।

-भारतेन्दु

मातृभूमि–वंदना, अतीत गौरव का गान, राष्ट्र–वैभव का स्मरण, स्वातंत्रय चेतना, परतंत्रता–विरोधी संघर्ष, राष्ट्र के सर्वतोमुखी पुनरुत्थान का संकल्प, स्वदेशी–स्वभाषा एवं स्वाभिमान के प्रति जागरूकता इत्यादि कर्म कविताओं में जागरण का वेणु स्वर है, आज़ादी का शंखनाद है। लगभग एक शताब्दी (1857–1957) तक बहुआयामी जन–जागरण एवं स्वाधीनता संघर्ष के विराट अभियान को हर स्तर पर पल्लवित और पोषित करने में हिंदी कवियों का आंकलन अध्ययन एवं अनुशीलन वृहत् ग्रंथों के रूप में पूर्ण नहीं हो सका है। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में रचित हिंदी–काव्य के मुखर राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने वाले कवियों में श्रीधर पाठक (भारत गीत में–जय जय प्यारा भारत देश), बालमुकुंद गुप्त (स्फुट कविताएँ), मैथिलीशरण गुप्त (भारत–भारती), सियारामशरण गुप्त (उन्मुक्त), जयशंकर प्रसाद (हिमाद्रि तुंग से..., अरुण यह मधुमय देश हमारा, भारत वर्ष आदि), निराला (जागो फिर एक बार), गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' (जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। वह ह्रदय नही है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।) नवीन (विप्लव–गायन), माखनलाल चतुर्वेदी (हिमकिरीटिनी–जवानी, एक फूल की चाह, कैदी और कोकिला इत्यादि), दिनकर (हुंकार), सुभद्रा कुमारी चौहान (झांसी की रानी, वीरों का कैसा हो वसंत), सोहनलाल द्विवेदी (भैरवी, पूजागीत, सेवाग्राम), रामनरेश त्रिपाठी (पथिक), करूणा शंकर शुक्ल 'करूणेश' (ऐसी जिंदगी से मर जाना बेहतर होगा) छैलबिहारी दीक्षित 'कंटक' (लेकर युग की अग्नि परीक्षा, देता है भारत फिर दीक्षा), प. वंशीधर शुक्ल (ऊबे अँगरेजी जुल्मन ते, सोचने कब लौ आफति झेली। तोरन देवी शुक्ल 'लली' (तूने ही सोते भारत को निद्रा से आज जगाया है), कवि प्रसाद (जननी जिसकी जन्म भूमि हो, वसुंधरा ही काशी हो), गुरू भक्त सिंह (मुट्ठी भर ये कुटिल विदेशी कोटि कोटि हम भारत वीर) रामचरित उपाध्याय (हम भारतवासी को, यदि जाने पावें सुरराज), माधव शुक्ल (वीरों की शंख ध्वनि से ही युग में अन्तर आन पड़े हैं), श्यामलाल गुप्ता (पार्षद) (विजयी विश्व तिरंगा प्यारा। झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।), श्याम नारायण पाण्डेय (पराधीनता की बेड़ी में रहना स्वीकार नहीं) आदि के अलावा हिंदी के असंख्य गीतों, कवित्त, छंदकारों के रचनाकारों की राष्ट्रीय चेतना के आधारभूत तत्व–देशप्रेम और जन्मभूमि के प्रति रागात्मक संवेदन का बड़े उदात शब्दों में प्रकटीकरण हुआ है। विद्वान लेखक डॉ. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा के शब्दों में 'भूमि–सूक्त भारत–भूमि की विशालता और इसके नानाविध प्राकृतिक वैभव का विराट गौरवान्वयन है। इसमें हमारी मातृभूमि की गरिमा का अभिज्ञापन है।

प्रतापनारायण मिश्र बहुत पहले, 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण में भारत भू को जगा चुके थे– सब तजि गहौ स्वतंत्रता, नहिं चुप लातें खाव। (प्रताप लहरी, पृ. 23)

भारत सरकार के राष्ट्रीय अभिलेखागारों के साक्ष्य पर ध्यान देने से पता चलता है कि हिंदी के लगभग तीन सौ काव्य–संग्रह अंग्रेज–सरकार द्वारा जब्त किये गये। चाँद का फाँसी अंक आज भी प्रसिद्ध है। आज का हिंदी–पाठक प्रायः अनभिज्ञ है कि कितने हिंदी के कवि और लेखक भारत माँ की वन्दना और स्वाधीनता के जागरण में जेलों में भर गये, लाठी–गोली का शिकार बने या फाँसी पर झूल गये। उन्ही में से एक वीर भूमि बुंदेलखण्ड में आज़ादी के दीवाने कवि घासी राम व्यास का जन्म 05 सितंबर, 1903 को मऊरानीपुर जिला झांसी में हुआ था। पैतृक पेशा पंडिताई छोड़कर आज़ादी के लिए विजयगान गाने की कटीली राह चुनी। व्यास ने अपनी कलम से लिखा–

''बरबीर नहीं हटने के कभी, रण के रसरंग घूले हुए हैं।
जुल्मों से जले हुए हैं दिल व्यास, जफाओं से जख्म धुले हुए हैं।
यह प्राण रहें न रहें अब तो, हम आन पे आन तुले हुए हैं।
डर क्या दिखलाते हो गोलियों का,
यह सामने सीने खुले हुए हैं।''

युवा कवि व्यास 1921, 1930, 1932 तथा 1940 में चार बार जेल गये। अंतिम जेल प्रवास उनके लिए काल साबित हुआ। जेल में गंभीर रूप से बीमार होने से 26 पौंड वजन कम हो गया। 16 अप्रैल, 1942 को 39 वर्ष की अल्पायु में ही महाकवि आजादी का सपना आँखों में लिए विदा हो गये। घासी राम 17 वर्ष की आयु में जनकवि के रूप में स्थापित हो गये थे।

प्रबल प्रताप सा प्रताप दे पराक्रम दे,
विक्रमशिला विक्रम पृथ्वी सा लक्ष्य सर दे।

साहस स्वदेश व्रत साधन शिवाजी जैसा,
छत्रसाल जैसी दिव्य दृढ़ता अमर दे।

व्यास गुण गौरव गुरू गोविन्द सा,
लक्ष्मी महारानी ऐसी वीरता का वर दे।

कर दे स्वतंत्र भव्य भारत हमारा देवि,
भारती हमें तू भारतीयता से भर दे।

प्रसिद्ध क्रांतिकारी चंद्रशेखर आज़ाद ने श्रोताओं के बीच छद्म रूप से बैठ कर कवि व्यास की ओज भरी वाणी में लक्ष्मीबाई तथा महाराणा प्रताप विषयक छंद को सुना था –

**''कूद पड़ सिंह-सा दहाड़ शत्रु सेना पर,
विश्व को दिखा दे 'व्यास' विक्रम सिरोही का।
बेजा मत मान लेजा-लेजा शीघ्र भेजा फाड़,
नेजा पर टांग दे कलेजा देशद्रोही का।''**

सन् 1934 में इंदौर में हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन महात्मा गांधी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, अधिवेशन के अंत में कवि सम्मेलन में व्यास जी ने महात्मा गांधी को निम्न छंद सुनाया–

**कितनी विपरीत हवाएं चलीं, सहे शीत-समीर पै आह न की।
जलते हुए ग्रीष्म प्रभाकर ने, बरसायें अंगार कराह न की।**

20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में भारतीयों का एक वर्ग सत्ता से लाभाविन्त बने रहने अंग्रेज और अंग्रेजी के साथ खडा था। देश की आज़ादी के आंदोलन की चेतना को अभिव्यक्त करने के लिए भाषाई ताकत के रूप में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का बल सभी अहिंदी–भाषी महात्मा गाँधी, सुभाष चंद्र बोस, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, ने किया, सभी ने हिंदी को महत्वपूर्ण माना। ''दक्षिण अफ्रिका से भारत लौटने पर गांधी जी ने पाया कि हिंदी के विरोध में अंग्रेजी सरकार, कांग्रेस के अधिकांश नेता तथा अंग्रेजी राज चलाने वाली नौकरशाही खड़ी थी। गांधीजी ने इन तीनों से मोर्चा लिया। गांधीजी ने दक्षिण के चार प्रान्तों आंध्र, तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक को हिंदी के अनुकूल बनाया। बाद में बाकी के प्रांत असम, बंगाल, उड़ीसा, महाराष्ट्र गुजरात और सिंध में हिंदी का प्रचार चलाकर यहाँ के लोगों को हिंदी के अनुकूल बनाकर भारतेन्दु हरिशचन्द्र की अभिलाषा **'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नत्ति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल' अंग्रेजी पढ़ि जदपि, सब गुन होत प्रवीन, पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।।** को पूर्णता प्रदान की। भारतेन्दु ने 1884 की कार्तिक पूर्णिमा को बलिया के ददरी में मेले में एक भाषण दिया। यह भाषण 19वीं–20वीं सदी की भारतीय भाषाई और सांस्कृतिक समझ का घोषणा पत्र है।'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?' शीर्षक है इस भाषण का। सत्ता की भाषा मुगलिया सल्तनत में फारसी हो सकती थी, अंग्रेजी सल्तनत में अंग्रेजी हो सकती थी, पर हिंदी भारतीय समाज का संवाद माध्यम है।

अंग्रेज बांटो और राज करो की नीति के तहत दंगे करवाते थे जिससे भारतीय मानस पीड़ित था। भारतीयता की यह कराह कविता में सुनाई पड़ जाती थी–

**अस्त-व्यस्त सब मापदंड थे पशुता ने प्रभुता पाई।
जननी-कोख-कलंक लड़ पड़ा हा जब भाई से भाई।**

-रणछोड़ दास

**हैवगा स्वतंत्र भारत हमार। सब दवा बसै मंजन स्वतंत्र
सब रेल शबे अंजन स्वतंत्र, चक्की चूल्हा खूँटा स्वतंत्र
झूठी स्वतंत्र झूठा स्वतंत्र, परतंत्र एक ईमानदार
ह्वैगे स्वतंत्र भारत हमार।**

-बंशीधर शुक्ल

''देशभक्त वीरों, मरने से नेक नही डरना होगा प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा''–नाथूराम शर्मा शंकर (सर्वस्य), की देश प्रेमियों को अपने देश की रक्षा के लिये अपने प्राणों को बिना किसी डर के न्योछावर करने का आग्रह किया।

**''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध भारती,
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती''**

-'चन्द्रगुप्त (जयशंकर प्रसाद)'

हिंदी के इतिहास में देश के संघर्ष की कहानी समाहित है। हिंदी का इतिहास, देश की स्वतंत्रता के इतिहास से कम रोचक या संघर्षपूर्ण नहीं है। भारतीय जीवन को विभिन्न स्तरों पर अपने काव्य से प्रभावित कर स्वतंत्रता के गरम और नरम दल के प्रति चेतना जगाने में सार्थक भूमिका रही है। इसी कारण हिंदी सिर्फ संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा ही नही बल्कि हिंदी भारत की संपर्क भाषा और राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी आज़ादी आन्दोलन में हिंदी के कार्यों के कारण उन्होंने तो स्वयं इसे 'हिंदी की नवधा–भक्ति निरूपित किया था। हिंदी हित चिंतक पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपनी कविताओं में भारत सांस्कृतिक गौरव तथा गौरवशाली इतिहास का जिक्र अपनी कविताओं में किया है।

**''आज सिंधु में ज्वार उठा है, नगपति फिर ललकार उठा है
कुरुक्षेत्र के कण-कण से फिर ''पांचजन्य हुंकार उठा है।''**

आज़ादी की संघर्ष गाथा से विकास की गाथा तक हिंदी का राष्ट्र के निर्माण में अतुलनीय योगदान रहा है। राष्ट्रीय चेतना की संवाहक हिंदी स्वतंत्रता के संघर्ष के 1846 में हुए बुन्देला विद्रोह से लेकर असहयोग आन्दोलन, नमक सत्याग्रह, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, नील सत्याग्रह, खादी तथा स्वदेशी आन्दोलन जैसे युग प्रवर्तक अभियानों में सहयोगी के रूप में सदैव अपनी महती भूमिका में दिखती है।

संदर्भः

1. मध्य प्रदेश संदेश पत्रिका।
2. भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी कवियों का योगदान,
3. अहा! जिन्दगी, गगनांचल

$ 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था- प्रौद्योगिकी व राजभाषा

लेख

संतोष तुकाराम टेलकिकर
सहायक प्रबंधक (राजभाषा), ऋषिकेश

''उम्र भर गालिब यही काम करता रहा,
धूल चेहरे पर थी और आईना साफ करता रहा''

हमारी स्थिति भी इस शेर की तरह ही हुई है, हमारे पास सब कुछ मौजूद है लेकिन हम उम्र भर किसी और भाषा की तलाश में दौड़ रहे हैं। हमारी भारतीय भाषाओं में सामर्थ्य की कोई कमी नहीं है लेकिन हम अंग्रेजी भाषा के पीछे भाग रहे हैं।

भारत का लक्ष्य 2025 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था हासिल करना है। वर्तमान में भारत दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है। वहीं अमेरिका अभी पहले नंबर पर है, जिसकी अर्थव्यवस्था का साइज 26.7 ट्रिलियन डॉलर है। इसके बाद दूसरे नंबर पर चीन है, तीसरे नंबर पर जापान और चौथे स्थान पर जर्मनी है, इसके बाद भारत का नंबर आता है। भारत की अर्थव्यवस्था सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। अर्थव्यवस्था की क्षमता के अनुसार यह लक्ष्य प्राप्त करना अधिक मुश्किल नहीं है, किंतु भारत की मौजूदा स्थिति कई चुनौतियों का सामना कर रही हैं जिसमें मुख्य चुनौती आर्थिक क्षेत्र से आ रही है, साथ ही अन्य समस्याएँ भी हैं जिन्हें दूर करना भी जरूरी है। एक रिपोर्ट के अनुसार प्रधानमंत्री जी ने 2025 तक देश की अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। एसएंडपी ग्लोबल इंडिया मैन्यूफैक्चरिंग ने हाल ही में कहा था कि भारत की जीडीपी 2030 तक जापान से आगे निकल सकती है। इससे भारत दुनिया की तीसरी और एशिया में दूसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी बन जाएगा। भारत की जीडीपी 2030 तक बढकर 7,300 अरब अमरीकी डॉलर होने का अनुमान है।

किसी भी राष्ट्र के विकास में उस राष्ट्र की भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। राष्ट्र की पहचान उसकी संस्कृति है और भाषा संस्कृति की संवाहक है। भारत को महान संस्कृति की विरासत हासिल है और यही कारण है कि भारत बहुभाषी देश है। भारत में अनेक भाषाओं का संगम है। हम पहले हमारी मातृभाषा में सोचते है, यह सोचने की प्रक्रिया केवल और केवल मातृभाषा में ही हो सकती है और बोलते समय हम उसका अनुवाद करते है। इस अनुवाद की प्रक्रिया में हम बहुत कुछ अंशों का सही अनुवाद नहीं कर पाते। अर्थात हम अंग्रेजी में अपने विचार नहीं अनुवादयुक्त विचार प्रकट करते हैं। हो सकता हैं कि इस कारण कभी–कभी भाषा हमारे विकास में बाधक बन सकती है। इससे बचने के लिए हमें राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना अनिवार्य होगा।

वर्तमान युग डिजिटल युग है। आजकल बाजार से गुजरते हुए अक्सर हमें सुनने को मिलता है – देवियों और सज्जनों आपके खाते में... राशि जमा हो गई है। यह डिजिटल युग की भाषा के प्रति क्रांति है। भारत के अधिकतर लोग ग्रामीण इलाकों में रहते है, जहां पर आदान–प्रदान हेतु स्थानीय भाषा अथवा हिंदी भाषा में बोलचाल होती है और यही लोग हैं जो 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने में अग्रस्थान पर खड़े हैं। ग्रामीण क्षेत्र से फल, फूल, अनाज आदि भारत के शहरों तक ही सीमित न रहकर देश के कोने–कोने तक भारत की वस्तुएं बेची जा रही हैं और यह केवल अपनी भाषा के कारण ही संभव हुआ है। आज बाज़ार में ऐसे मोबाइल ऐप अथवा वेबसाइट है जो कि आपको अपनी भाषा में विस्तृत जानकारी देते हैं। 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार देश में अंग्रेजी जानने वालों की संख्या दो लाख साठ हजार, यानी मात्र 0.02 प्रतिशत है। अर्थात देश की 99.08 प्रतिशत आबादी भारतीय भाषाएं बोलने वाली है। 2011 की जनगणना के

ही मुताबिक हिंदी को देश भर में प्रथम या द्वितीय भाषा के रूप में इस्तेमाल करने वालों की आबादी 75 प्रतिशत है यदि इसमें तीसरी भाषा के रूप में प्रयोग करने वालों की संख्या मिला ली जाए तो यह आंकड़ा तकरीबन 90 फीसदी तक पहुंच सकता है जो लोग हिंदी को अच्छे से बोल एवं समझ सकते हैं। इस प्रकार इन आंकडों से स्पष्ट है कि एक सफल एवं सशक्त अर्थव्यवस्था के लिए देश की बहुसंख्यक आबादी की भाषा का प्रयोग बेहद आवश्यक है। देश के सर्वसमावेशक विकास हेतु हिंदी भाषा का विकास एवं सौ प्रतिशत प्रयोग करना, आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

सूचना प्रौद्योगिकी के युग में भारत किसी देश से कम नहीं है, आपने देखा होगा कि भारत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले वित्तीय संस्थानों ने भी अब अंग्रेजी भाषा के पर्याय के रूप में हिंदी को रखा है। और यही कारण है कि आज देश की जनता चोबीसों घंटे अपने घर बैठे–बैठे अपनी भाषा में लेन–देन कर रही है। यह आज के डिजिटल भारत का रूप है। हमें हमारी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में भाषा की सर्वोपरि भूमिका को नजरंदाज नहीं करना चाहिए। वर्तमान समय में लगभग सभी वित्तीय संस्थानों में व्यवहार हेतु उपयोग में आने वाले ऐप अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी एवं स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध है। ग्राहक सेवा हेतु किए गए सर्वे के अनुसार 80% लोग हिंदी में बात करना पसंद करते हैं, 4% अंग्रेजी में और बाकी अन्य स्थानीय भाषा में बात करते हैं। इस कारण अब रुपयों का आदान–प्रदान करने के लिए घंटों बैंक की लाइनों में खड़े होने की जरूरत नहीं है, बैठे–बैठे चंद सैकंड में अपनी पसंदीदा भाषा के साथ व्यवहार कर सकते हैं। भारत में हर बात हिंदी से जुड़ी हुई है। ग्राहकों को जोड़े रखने में भाषा अर्थात हिंदी की भूमिका महत्वपूर्ण है। आपने देखा होगा कि भारत के साथ लगभग सभी विदेशी कंपनियों के विज्ञापनों की भाषा हिंदी ही है। हिंदी इसलिए क्योंकि यह बाजार की और ग्राहकों की भाषा है और यही हिंदी लघु से लेकर बड़े–बड़े व्यापार की भाषा बन गई है। अपनी भाषा का प्रयोग करने वाले लोग ही भारत की अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन बनाने में एक कड़ी के रूप में कारगर होंगे। कोई भी कार्य करने के लिए सबसे पहले हमारी सोच महत्वपूर्ण है और उसके बाद हमारे कार्य। मेरी, आपकी और हम सबकी जिम्मेदारी है कि हमारे देश की अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन बनाने हेतु भाषा में प्रौद्योगिकी के साथ नवीनतम प्रयोग का उपयोग करते हुए प्रचार–प्रसार करना होगा। इसलिए भारतेन्दु हरिशचंद ने कहा है कि

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन,
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।''

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की नवीन पहल

''कंठस्थ 2.0-अनुवाद टूल''

कंठस्थ 2.0 (अनुवाद सारथी) के इस अद्यतन संस्करण में तीन नई विशेषताएं शामिल की गई हैं जिससे यह अब बेहद उपयोगी सॉफ्टवेयर बन गया है। ये फीचर इस प्रकार हैं:

न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन अर्थात् मशीनी अनुवाद-इस सुविधा के अनुसार अब यह न केवल अपनी मेमोरी (जिसमें इस समय करीब 25 लाख वाक्य हैं) से अनुवाद देगा बल्कि मशीनी अनुवाद भी उपलब्ध कराएगा।

स्मार्ट चैटबोट- यह May I help you की तरह है। इसमें नए प्रयोक्ता के लिए बहुत सारे प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दिए गए हैं। आप इन्हें एक प्रकार से "FAQs" या ''अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न'' कह सकते हैं। इनसे प्रयोक्ताओं को कंठस्थ का प्रयोग करने में बहुत महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होगी।

वॉयस टाइपिंग- अब इस सॉफ्टवेयर में टाइपिंग करने के लिए वॉयस टाइपिंग की सुविधा भी उपलब्ध करा दी गई है। प्रयोक्ता बोलकर भी टाइप कर सकते हैं।

ग्रीन हाइड्रोजन - सतत ईंधन

लेख

राघवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
उप प्रबंधक (एमपीएस), ऋषिकेश

निष्कर्षण की विधि की प्रकृति के आधार पर, हाइड्रोजन को ग्रे, ब्लू और ग्रीन तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:–

ग्रे हाइड्रोजन- यह कोयला या लिग्नाइट गैसीफिकेशन (काला या भूरा), या प्राकृतिक गैस या मीथेन (ग्रे) के स्टीम मीथेन रिफॉर्मेशन (एसएमआर) नामक प्रक्रिया के माध्यम से उत्पादित होता है। ये ज्यादातर कार्बन–गहन प्रक्रियाएं होती हैं।

ब्लू हाइड्रोजन-यह कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए कार्बन कैप्चर स्टोरेज (या कार्बन कैप्चर यूज (तकनीकों के साथ संयुक्त प्राकृतिक गैस या कोयला गैसीकरण के माध्यम से उत्पादित किया जाता है।

ग्रीन हाइड्रोजन-पवन या सौर जैसी नवीकरणीय ऊर्जा द्वारा संचालित इलेक्ट्रोलिसिस की प्रक्रिया के माध्यम से ग्रीन हाइड्रोजन प्राप्त किया जाता है। इलेक्ट्रोलिसिस में इलेक्ट्रोड द्वारा पानी के अणु को ऑक्सीजन और हाइड्रोजन में तोड़ने के लिए विद्युत प्रवाह का उपयोग करना शामिल है। जब हमें इस ग्रीन हाइड्रोजन को ऊर्जा में बदलने की आवश्यकता होती है, तब विशिष्ट टैंकों में संग्रहीत हाइड्रोजन को ईंधन सेल में भेजा जाता है। वहां यह फिर से हवा में ऑक्सीजन के साथ जुड़ जाता है और बिजली प्राप्त होती है। इस प्रक्रिया का एकमात्र उप–उत्पाद पानी है, जिसके परिणामस्वरूप यह एक स्वच्छ प्रणाली है जिसमें ऊर्जा का उत्पादन करने के लिए शून्य कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित होता है।

भौगोलिक स्थिति के कारण भारत में अक्षय ऊर्जा के विकास की काफी ज्यादा क्षमता है। भारत ने 2047 तक ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने और 2070 तक नेट जीरो हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, सभी आर्थिक क्षेत्रों में नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना भारत के ऊर्जा परिवर्तन का केंद्र बिंदु है। नवीकरणीय ऊर्जा द्वारा उत्पादित ग्रीन हाइड्रोजन में कम कार्बन और आत्मनिर्भरता की ओर देश को बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता है। हाइड्रोजन का उपयोग नवीकरणीय ऊर्जा के दीर्घकालिक भंडारण, उद्योग में जीवाश्म

ईंधन के प्रतिस्थापन, स्वच्छ परिवहन, और संभावित रूप से विकेंद्रीकृत बिजली उत्पादन, विमानन और समुद्री परिवहन के लिए भी किया जा सकता है।

राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन को 04 जनवरी, 2022 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था। इसके उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- भारत को दुनिया में ग्रीन हाइड्रोजन का अग्रणी उत्पादक और आपूर्तिकर्ता बनाना।
- ग्रीन हाइड्रोजन और इसके डेरिवेटिव के लिए निर्यात अवसरों का सृजन।
- आयातित जीवाश्म ईंधन और फीडस्टॉक पर निर्भरता में कमी।
- स्वदेशी विनिर्माण क्षमताओं का विकास।
- उद्योग के लिए निवेश और व्यापार के अवसरों को आकर्षित करना।
- रोजगार और आर्थिक विकास के अवसर पैदा करना।
- अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं का समर्थन करना।

मिशन में 2022–23 से 2029–30 तक का वर्षवार रोडमैप भी रखा है, जिसके दौरान दो चरणों में काम आगे बढ़ेगा। पहले चरण (2022–23 से 2024–25) में निर्धारित मानक बनाने, शुरुआती मांग सृजित करने, पायलट प्रोजेक्ट शुरू करने और स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहनों का एक सेट जारी करने की योजना है। अगले, चरण–2, (2026–27 से 2029–30) में, ग्रीन हाइड्रोजन के व्यावसायीकरण को बढ़ाने और इसे शिपिंग, परिवहन जैसे अन्य क्षेत्रों में ले जाने की योजना है। यह योजना इस धारणा पर आधारित है कि 2025–26 तक ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन की कीमतें कास्ट इफेक्टिव हो जाएंगी।

इस साल 01 फरवरी को केंद्रीय बजट पेश करते हुए माननीय वित्त मंत्री जी ने अपने भाषण में राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन को शुरू करने की घोषणा की। माननीय वित्तमंत्री जी ने मिशन के लिए 19,700 करोड़ रुपए का कैपिटल आउटले घोषित किया। 2023–24 के लिए, सात साल के मिशन के पहले वर्ष, सरकार ने 297 करोड़ रुपए आबंटित किए। देश में हरित हाइड्रोजन के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए यह इस तरह का पहला आबंटन है।

देश के "राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन" को बढ़ावा देने के लिए हमारी संस्था भी कटिबद्ध है। टीएचडीसी अपने ऋषिकेश, स्थित कार्यालय परिसर में 01 मेगावाट क्षमता के ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन के लिए एक पायलट परियोजना विकसित कर रही है। टीएचडीसीआईएल पायलट परियोजना से प्राप्त तकनीकी ज्ञान और अनुभवों का उपयोग करते हुए वाणिज्यिक स्तर पर भी ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन और भंडारण परियोजना विकसित करने की योजना बना रही है।

हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

संदर्भ:- माननीय सचिव श्रीमती अंशुली आर्य, आईएएस, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का 03 जुलाई, 2024 का अर्धशासकीय पत्र सं. 11034/04/2024 राजभाषा (नीति)।

पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी की अध्यक्षता में 14 सितंबर, 2024 को हिंदी दिवस तथा 14 एवं 15 सितंबर, 2024 को चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का सम्मिलित आयोजन भारत मंडपम, नई दिल्ली में होगा। कृपया सुनिश्चित करें कि यथासंभव आपके मंत्रालय/विभाग के प्रत्येक कार्यालय में हिंदी दिवस का शुभारंभ 14 सितंबर, 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में हो और समापन संबंधित मंत्रालय/विभाग/कार्यालय में हो। पत्र में अनुरोध किया गया है कि अपने मंत्रालय/विभाग के राजभाषा से जुड़े सभी अनुवाद अधिकारियों एवं मंत्रालय के कुछ अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को नई दिल्ली में होने वाले हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में अनिवार्य रूप से सम्मिलित होने का निर्देश दें। कृपया सभी संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों/बोर्डों/निगमों आदि को भी ऐसे ही निर्देश मंत्रालय की ओर से जारी किए जाएं। उनके राजभाषा हिंदी से जुड़े अधिकारी भी अनिवार्य रूप से 14–15 सितंबर, 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में होने वाले कार्यक्रम में सहभागिता सुनिश्चित करें।

विस्तृत जानकारी के लिए राजभाषा विभाग की वेबसाइट rajbhasha.gov.in पर विजिट करें।

एथेंस का राजा-तिमन

लेख

(विलियम शेक्सपियर के नाटक Timon of Athens का संक्षिप्त रूपांतरण)

आर. पी. रतूड़ी
वरि. प्रबंधक (एम.पी.एस.), ऋषिकेश

एथेंस नगर का राजा तिमन अपनी फिजूलखर्ची और चापलूसों को पसंद करने के लिए प्रसिद्द था। जो व्यक्ति चापलूसी में विश्वास करते थे, तिमन उन्हें बहुत पसंद करता था। उसके आस–पास चापलूसी कर अपना उल्लू सीधा करने वालों की भीड़ लगी रहती थी। उसका दरबार भी चापलूस और नाकाबिल लोगों से भरा पड़ा था। तिमन के प्रधानमंत्री और उप प्रधानमंत्री भी चापलूसी के लिए प्रसिद्ध थे। कहते हैं कि उसके उप प्रधानमंत्री ने पहली बार दरबार में आकर तिमन की दयालुता, दानवीरता और दरियादिली की भरपूर प्रशंसा करते हुए एक चापलूसी भरा छंद सुनाया जिससे तिमन वाह–वाह कर उठा और उसने उसे उप प्रधानमंत्री की कुरसी पर आसीन कर दिया।

ऐसे ही एक बार तिमन के दरबार में एक युवक आया और फरियाद करते हुए बोला, ''महाराज की जय हो, महाराज, मैं एक सेठ की बेटी से प्रेम करता हूँ और उससे विवाह करना चाहता हूँ। किंतु महाराज, मेरी दरिद्रता के चलते सेठ अपनी बेटी का विवाह मेरे साथ करने को तैयार नहीं है। अब आप ही मेरी सहायता कीजिए। मैं बड़ी उम्मीद लेकर आपके पास आया हूँ। तिमन उसकी खुशामदी से प्रसन्न होकर बोला, वाह नौजवान, क्या दिल पाया है तुमने! तुम्हारे साहस की मैं दिल से प्रशंसा करता हूँ। तुम्हारे लिए मैं अपना सारा खजाना और राज्य लुटाने को तैयार हूँ। जाओ, तुम्हें जितना धन चाहिए, खजांची से ले लो और धूमधाम से विवाह करो। मुझे तुम जैसे साहसी और उदार लोगों की बहुत आवश्यकता है। आज्ञा पाते ही युवक उसी समय खजांची के पास गया और भरपूर धन लेकर चला गया।

तिमन के दरबार में ऐसी घटनाएँ प्रतिदिन घटती रहती थीं। उसने जरा सी चापलूसी के बदले कई नालायकों को अपना दरबारी बना लिया था। ऐसे चापलूसी भरे हथकंडे अपनाकर न जाने अब तक कितने नाकाबिल चापलूस मालामाल हो चुके थे। स्थिति यह थी कि खजाना दिन–प्रतिदिन तेजी से खाली होता जा रहा था।

एक बार किसी दूसरे देश का एक व्यापारी दरबार में उपस्थित हुआ। उसने तिमन को एक घोड़ा भेंट किया। तिमन ने भी उस व्यापारी को उपहारस्वरूप पचास हजार रुपए देने की आज्ञा खजांची को दी। खजांची हाथ जोड़कर बोला, महाराज, निरंतर लोगों को दान देने के कारण राजकोष पूरी तरह से खाली हो चुका है। पचास हजार तो क्या, इन्हें देने के लिए इस समय उसमें एक रुपया भी नहीं है।

क्या बकते हो? राजकोष खाली कैसे हो गया? इस व्यापारी को भेंट में अब हम क्या देंगे? तिमन ने चौंकते हुए कहा। वह कुछ देर तक माथे पर हाथ रखकर सोचता रहा। फिर उसके होंठों पर मुस्कान उभर आई। वह अभिमान से भरकर बोला, ठीक है, तुम इसी समय शाही संपत्ति का कुछ अंश बेच दो। उससे जो धन प्राप्त हो, उसे इस व्यापारी को हमारी ओर से पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया जाए। खजांची हाथ जोड़कर नम्रतापूर्वक बोला, क्षमा करें, महाराज! शाही संपत्ति का अधिकांश भाग पहले ही जरूरतमंदों और याचकों में दानस्वरूप बाँटा जा चुका है। अब शाही संपत्ति का इतना भी टुकड़ा नहीं बचा कि उसे बेचकर व्यापारी को पचास रुपए भी दिए जा सकें। नहीं! क्या शाही संपत्ति का इतना भाग बेचा जा चुका है? तिमन पुनः चौंकते हुए बोला। तिमन धर्मसंकट में फँस गया। वह व्यापारी को पचास हजार रुपए देने की घोषणा कर चुका था। इसलिए बहुत सोच–विचार के बाद उसने खजांची से कहा, जाओ, नगर के किसी भी

पति-पत्नी के बीच का संबंध घनिष्ठ मित्रों के संबंध के समान होना चाहिए -डॉ. बी.आर. अंबेडकर

धनी से पचास हजार रुपए का ऋण लेकर इस व्यापारी को मेरी ओर से दे दो। मेरा नाम सुनकर कोई भी धन देने से इनकार नहीं करेगा।

खजांची एक–एक कर नगर के सभी अमीरों के पास गया और उनसे सहायता की प्रार्थना की। लेकिन कल तक जो तिमन की जी–हुजूरी किया करते थे, आज उन्होंने उसकी ओर से मुँह फेर लिया था। अंत में थक–हारकर खजांची दरबार में लौट आया। सेवक, तुम ऋण ले आए? मेरे किस प्रिय ने धन दिया है? तिमन ने प्रश्न किया। खजांची थके स्वर में बोला, महाराज, सर्प केवल डस सकते हैं, उनसे मित्रता या उदारता की उम्मीद करना मूर्खता है। मैंने नगर के प्रत्येक धनी का द्वार खटखटाया, लेकिन ऋण का नाम सुनते ही सभी ने कोई–न–कोई बहाना बनाकर मुँह मोड़ लिया। यह सुनकर कि किसी ने भी ऋण नहीं दिया और आँखें फेर ली, क्रोध की अधिकता से उसकी आँखों में खून उतर आया। वह हाथों में तलवार लेकर एक–एक का सिर काट डालना चाहता था। उसका दिल बार–बार चीख रहा था, मेरे टुकड़ों पर पलने वाले लालची कुत्तों! क्या मेरे उपकारों का यही बदला है? क्या इसी दिन के लिए तुम मेरी चापलूसी, मेरी खुशामद किया करते थे? क्या मेरे लिए कहे जाने वाले तुम्हारे प्रशंसायुक्त शब्द मात्र धन हथियाने के साधन थे? मैंने अपना सारा धन तुम पर न्योछावर कर दिया, किंतु तुम ऐसे दगाबाज निकले कि मुझसे ही आँखें चुराने लगे। मैं तुम्हें इसकी सजा अवश्य दूँगा। तुम्हें इतनी आसानी से क्षमा नहीं करूँगा। यह सोचकर तिमन सिंहासन से उठा और अपने कक्ष में चला गया।

दो दिन बाद तिमन ने नगर के सभी धनवानों को दावत पर आमंत्रित किया। इस आमंत्रण से चापलूसों की बाँछे खिली हुई थीं। चापलूसी करके तिमन से धन प्राप्त करने का उन्हें एक और सुनहरा अवसर मिल रहा था। निश्चित समय पर अतिथि एक–एक कर अतिथिशाला में एकत्र होने लगे। उन्हें उम्मीद थी कि स्वभाव के अनुसार तिमन उन्हें कीमती उपहारों से सम्मानित करेगा, रत्न–आभूषण प्रदान करेगा। जिन्होंने ऋण देने से इनकार किया था, वे सोचने लगे कि कल यदि हम थोड़ा धन देकर तिमन की सहायता कर देते तो आज हमें सबसे अधिक उपहार प्राप्त होते। उन्हें इस बात का मलाल था।

तभी कक्ष में तिमन ने प्रवेश किया और उसका संकेत पाकर नौकर हाथी दाँत की विशाल मेज पर भोजन की तश्तरियाँ और प्यालियाँ लाकर रखने लगे। उपस्थित अतिथिगण कपड़ों से ढके इन बरतनों में मसालेदार पुलाव, कबाब, मिठाइयाँ, शराब आदि स्वादिष्ट व्यंजनों की कल्पना कर रहे थे। तिमन ने भोजन आरंभ करने का संकेत किया। अतिथियों ने शीघ्रता से कपड़े हटाकर भोजन की ओर देखा तो उनकी आँखें फटी–की–फटी रह गई। सोने–चाँदी के बरतनों के स्थान पर मिट्टी की प्यालियाँ थीं जिनमें हड्डियाँ और पानी था। सभी अचंभे से तिमन की ओर देखने लगे। तिमन अपने आसन से उठा और चिंघाड़ते हुए बोला, तुम सब रुक क्यों गए? भोजन क्यों नहीं करते? जब मेरे पास खिलाने के लिए स्वादिष्ट भोजन था, तब तुमने पेट भरकर खाया। लेकिन आज जब मेरे पास केवल ये हड्डियाँ और पानी हैं तो इन्हें खाने से पीछे क्यों हट रहे हो? खाओ इन्हें और अपनी भूख शांत करो। आज तक तिमन का यह रौद्र रूप किसी ने नहीं देखा था। वे समझ गए कि यह उनकी कृत्घनता का असर है। उन्होंने नजरें नीची कर ली और जहाँ अवसर मिला, उठकर भाग गए। यह तिमन की अंतिम दावत थी।

इस घटना ने तिमन को गहरे शोक, निराशा और हताशा के गर्त में डुबो दिया। हर व्यक्ति उसे स्वार्थी नजर आने लगा। उसे सबसे घृणा हो गई। अंततः उसने इस बनावटी और स्वार्थी दुनिया को त्यागने का निश्चय कर लिया। उसे एथेंस से इतनी घृणा हो गई कि नगर से बाहर निकलते ही उसने शरीर से सारे वस्त्र उतार फेंके और नगर की प्राचीरों को संबोधित करते हुए बोला, हे प्राचीरो! इन स्वार्थी कुत्तों की रक्षा करने की अपेक्षा तुम ध्वस्त हो जाओ। इस नगर के वासी पथभ्रष्ट और चरित्रहीन हो जाएँ, संतानें अपने माता–पिता की शत्रु हो जाएँ, लोग एक–दूसरे के खून के प्यासे हो जाएँ। दरबारी पदच्युत हो जाएँ। इस नगर का विनाश हो जाए। इससे अच्छा तो वह जंगल है, जहाँ रहने वाले जानवर इन स्वार्थी भेड़ियों से अच्छे होते हैं।

भटकते–भटकते तिमन समुद्र के किनारे जा पहुँचा और वहीं कुटिया बनाकर रहने लगा। भोजन के लिए वह जंगल की जमीन खोदता और कंद–मूल खाकर पेट भर लेता था। इसके अतिरिक्त अपने दरबारियों, मित्रों और नगर के सेठों को कोसना उसका मुख्य कार्य था। उसे सबसे

घृणा हो गई। वह उनके विनाश के लिए लगातार भगवान से प्रार्थना करता था। उसके जीवित रहने का एकमात्र उद्देश्य था, एथेंस का विनाश। मरने से पूर्व वह उसका विनाश देख लेना चाहता था।

एक दिन तिमन को ढोल–नगाड़ों की आवाज के साथ एक घुड़सवार सैनिक आता दिखाई दिया जिसके साथ कुछ सैनिक भी थे। यह सवार उसका मित्र कैप्टन एलसिविडस था, जिसे किसी बात से नाराज होकर तिमन ने ही एथेंस से बाहर निकाल दिया था। एलसिविडस उसे पहचान नहीं सका। उसने तिमन का परिचय पूछा। तिमन कठोर स्वर में बोला, मैं भी तुम्हारी तरह एक दुष्ट हूँ। चले जाओ यहाँ से। मैं किसी भी इंसान की सूरत नहीं देखना चाहता। आवाज सुनते ही एलसिविडस तिमन को पहचान गया। उसकी ऐसी दयनीय और करुण हालत देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह पास आकर बोला, तिमन, मेरे मित्र! तुमने यह क्या हालत बना रखी है? तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तिमन दूर हट गया और गुस्से में भरकर बोला, मुझे अकेला छोड़ दो। जाओ और जाकर एथेंस की धरती को खून से लाल कर दो। अपनी तलवार से सभी स्वार्थी लोगों के सिर काट दो।

एलसिविडस को समझते देर न लगी कि तिमन अपना मानसिक संतुलन खो बैठा है। वह पुनः स्नेह भरे स्वर में बोला, मित्र, तुम्हारी यह दशा कैसे हुई? मुझे बताओ, मैं तुम्हारे शत्रुओं से अवश्य प्रतिशोध लूँगा। मैं अपनी इस दुर्गति का स्वयं जिम्मेदार हूँ। मेरी दयालुता और इंसानियत ही मेरे शत्रु बन गए। दूसरों को देते–देते मैंने अपना सब कुछ गँवा दिया और जब मुझे धन की आवश्यकता पड़ी तो सभी ने आँखें फेर लीं। तिमन आँसू बहाते हुए बोला। उसकी दयनीय हालत देखकर एलसिविडस बोला, मित्र, जानते हो, इस समय मैं सेना लेकर एथेंस पर चढ़ाई करने जा रहा हूँ। जल्दी ही मैं और मेरे सैनिक एथेंस को मिट्टी में मिला देंगे। एलसिविडस ने सोचा था, शायद यह समाचार सुनकर तिमन दुखी होगा।

परंतु तिमन प्रसन्न होते हुए बोला, अपने सैनिकों को आदेश दे दो कि वे एथेंस में किसी को भी जीवित न छोड़ें। उनकी तलवारें एक बार उठे तो एथेंसवासियों का नाश करके ही नीचे आएँ। जल्दी ही एथेंस को जीतने के बाद मैं तुमसे भेंट करने आऊँगा। यह कहकर एलसिविडस सेना सहित वहाँ से चला गया।

एलसिविडस को सेना सहित आते देख एथेंस के दरबारियों ने घुटने टेक दिए और सर्वसम्मति से उसे अपना राजा घोषित कर दिया। इस प्रकार बिना लड़ाई किए एथेंस पर एलसिविडस का अधिकार हो गया। इसके बाद उसने एक सेवक को तिमन का पता लगाने के लिए भेजा। सेवक ने कुटिया और उसके आस–पास का सारा क्षेत्र छान मारा, परंतु तिमन कहीं भी न मिला। अंततः उसकी दृष्टि एक कब्र पर पड़ी। कब्र के ऊपर लिखा था– इस स्थान पर एक अभागे और घृणित व्यक्ति को दफनाया गया है, जिसका नाम तिमन था। उसने जीवन भर मनुष्य और मनुष्य के नाम से घृणा की। जो भी व्यक्ति स्वार्थी, नीच और बेईमान है, महामारी उसका अंत कर दे। यहाँ से निकलने वालो, अब तुम मुझे दुत्कारो, परंतु यहाँ रुकने की मत सोचना।

पहला विश्व हिंदी सम्मेलन

पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी से 14 जनवरी, 1975 तक नागपुर, महाराष्ट्र में आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्वावधान में हुआ। इसकी राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष तत्कालीन महामहिम उपराष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती थे। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अध्यक्ष श्री मधुकर राव चौधरी महाराष्ट्र के तत्कालीन वित्त, नियोजन व अल्पबचत मंत्री थे। पहले विश्व हिंदी सम्मेलन का बोधवाक्य **''वसुधैव कुटुम्बकम''** था। सम्मेलन के मुख्य अतिथि मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री शिवसागर रामगुलाम थे, जिनकी अध्यक्षता में मॉरीशस से आए एक प्रतिनिधिमंडल ने भी सम्मेलन में भाग लिया था। इस सम्मेलन में लगभग 30 देशों के कुल 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बढ़ावा देने में संचार और जनसंपर्क की भूमिका

लेख

अविनाश कुमार
कार्यपालक प्रशिक्षु (जनसंपर्क)
वीपीएचईपी, पीपलकोटी

राष्ट्रों की संरचना में 'संचार' एकता और अखंडता की एक धुरी के रूप में खड़ा है, जो विविधता के अलग–अलग धागों को एक साथ जोड़कर सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण करता है।

जनसंपर्क (पीआर) का क्षेत्र, दूरियों एवं मतभेदों को पाटने, समझ को बढ़ावा देने और एक राष्ट्र को एक साथ बांधने वाले धागों को मज़बूत करने का एक महत्वपूर्ण रणनीतिक उपकरण है। इस लेख में, हम दुनिया भर के प्रासंगिक उदाहरणों के माध्यम से, राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बढ़ावा देने में संचार और जनसंपर्क की गहन भूमिका पर प्रकाश डालेंगे।

एक वैश्वीकृत युग में, जहां हर कोई एक दूसरे से अभूतपूर्व रूप से जुड़ा है, प्रभावी संचार के महत्व को कम करके आंका नहीं जा सकता है। यह एक माध्यम के रूप में कार्य करता है जिसके तहत भौगोलिक, सांस्कृतिक और भाषाई बाधाओं को पार करते हुए विचारों, मूल्यों और आकांक्षाओं को साझा किया जाता है।

जैसे भारत का उदाहरण देखिए, जो अपनी भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यहां, सरकार के संचार प्रयासों, विशेष रूप से बहुभाषी जनसंपर्क अभियानों में, अपनी विविध आबादी के बीच समावेशिता और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी और अंग्रेजी के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषाओं को अपनाकर, भारत की जनसंपर्क पहलें भाषाई स्पेक्ट्रम में नागरिकों के साथ गहराई से जुड़ी हैं, जो ''विविधता में एकता'' के विचार को सुदृढ़ करती हैं।

इसी तरह, संयुक्त राज्य अमेरिका में, जो संस्कृतियों और विचार धाराओं के मिश्रण वाला देश है, प्रभावी पीआर जटिल सामाजिक मुद्दों को सुलझाने और राष्ट्रीय एकजुटता को बढ़ावा देने में सहायक रहा है। राष्ट्रपति के संबोधनों से लेकर जमीनी स्तर के वकालत अभियानों तक, वैचारिक विभाजन को पाटने, सहानुभूति पैदा करने और आम मुद्दों पर नागरिकों को एकजुट करने के लिए संचार रणनीतियों को नियोजित किया गया है। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक आपदाओं या सामाजिक अशांति जैसे संकट के समय में, एकता, लचीलेपन और आपसी सहयोग पर ध्यान केंद्रित करने वाले पीआर अभियानों ने समुदायों को प्रेरित करने और देश के सामाजिक ताने–बाने को मजबूत करने का काम किया है।

इसके अलावा, जातीय या सांप्रदायिक तनाव से जूझ रहे क्षेत्रों में, संचार शांति निर्माण और सुलह के लिए एक शक्तिशाली साधन के रूप में उभरता है। नरसंहार और रंगभेद के इतिहास से आहत रवांडा और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में, बातचीत को बढ़ावा देने, समझ को बढ़ावा देने और गहरे घावों को ठीक करने के लिए रणनीतिक जनसंपर्क अभियान शुरू किए गए है। सामुदायिक रेडियो कार्यक्रमों से लेकर राष्ट्रीय सुलह आयोगों तक के मंचों के माध्यम से, संचार का इस्तेमाल लोगों की पीड़ा को आवाज देने, क्षमा की भावना को जागृत करने और पारस्परिक सम्मान, समानता एवं गरिमा पर आधारित साझा भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने के लिए किया गया है।

आकार देने में संचार और जनसंपर्क की भूमिका तेजी से बढ़ी है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, अपनी अद्वितीय पहुंच और प्रभाव के साथ, प्रतिस्पर्धी विचारधाराओं और आख्यानों के लिए लिए युद्धक्षेत्र के रूप में उभरे हैं। चाहे भू–राजनीतिक संघर्षों का संदर्भ हो या घरेलू नीतिगत बहस का, राज्य नेताओं, गैर–सरकारी संगठनों और जमीनी स्तर के आंदोलनों द्वारा संचालित रणनीतिक संचार अभियानों में जनता की राय को प्रभावित करने, नीतिगत परिणामों को आकार देने और अंततः इतिहास के पाठ्यक्रम को प्रभावित करने की शक्ति होती है।

हालाँकि, सकारात्मक बदलाव की अपनी क्षमता के साथ–साथ, संचार में गलत सूचना, ध्रुवीकरण और हेरफेर का जोखिम भी होता है। इंस्टाग्राम रील, सोशल मीडिया वायरल और फिल्टर बुलबुले के युग में, जहां सोशल मीडिया एआई एल्गोरिदम पुष्टिकरण पूर्वाग्रह को बढ़ाते हैं और संज्ञानात्मक कमजोरियों का फायदा उठाते हैं, वहाँ नैतिक, पारदर्शी और एक जिम्मेदार संचार एवं जनसंपर्क की अनिवार्यता इससे अधिक कभी नहीं रही है। यहां, एक सच्चाई और सार्वजनिक विश्वास के संरक्षक के रूप में पीआर पेशेवरों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। उनको राष्ट्र एवं जनहित में अपने संचार पहलों में सटीकता, निष्पक्षता और अखंडता के सिद्धांतों को बनाए रखने की जिम्मेदारी का पूरे ईमानदारी से निर्वहन करना होगा।

निष्कर्षः संचार और जनसंपर्क का गठजोड़ राष्ट्रीय एकता और अखंडता की एक जीवनधारा के रूप में कार्य करता है एवं नागरिकों और समुदायों के बीच सहानुभूति, समझ और एकजुटता का पोषण करता है। कहानी कहने, संवाद करने और जुड़ाव की शक्ति का उपयोग करके, संचार पेशेवरों में विभाजनों के खतरे को रोकने, पाटने और अधिक समावेशी, एकजुट और लचीले समाज सृजन करने की क्षमता होती है।

इसलिए विश्व की जटिलताओं एवं समस्याओं से निपटने के लिए हमें संवाद एवं जनसंपर्क की शक्ति को समझना होगा, इसके सकारात्मक बदलाव की क्षमता का दोहन करना होगा एवं इसके नकारात्मक उपयोग पर लगाम लगाना होगा।

आइए, एक विविधतापूर्ण दुनिया में एक समावेशी राष्ट्र एवं समाज के निर्माण में संचार एवं जनसंचार की परिवर्तनकारी क्षमता को पहचानें।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की नवीन पहल

‘‘हिंदी शब्द सिंधु- बृहत् शब्दकोश’’

‘‘हिंदी शब्द सिंधु–बृहत् शब्दकोश” देश की अन्य भाषाओं से हिंदी को समृद्ध करने की दिशा में विकसित किया जा रहा है। इसमें विभिन्न विषयों–जनसंचार, आयुर्वेद, खेलकूद, अंतरिक्ष विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, वैमानिकी, कंप्यूटर विज्ञान, इलैक्ट्रॉनिक्स, भू–गर्भशास्त्र, मानविकी आदि से संबंधित शब्दावली के साथ–साथ पारंपरिक शब्दावली को भी समाहित किया जा रहा है। इस शब्दकोश में शब्द की प्रविष्टि के साथ–साथ उसकी व्याकरणीय कोटि, अर्थ, पर्याय, आवश्यकतानुसार प्रयोग, विलोम, मुहावरे एवं तत्संबंधी अन्य आवश्यक जानकारियां दी गई है। यह शब्दकोश पूर्णतया डिजिटल तथा खोजपरक (सर्चेबल) है। यह एक ऐसा शब्दकोश होगा जो पूर्णतः अद्यतन और समावेशी होगा तथा इसमें हिंदी में प्रयुक्त होने वाले सभी शब्दों का अर्थ सहित संग्रह होगा। इस शब्दकोश में हिंदी और हिंदी क्षेत्र की बोलियों, उपभाषाओं और भाषाओं के शब्द, अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्द, मीडिया और न्यू मीडिया के शब्द, तकनीक और विज्ञान के शब्द तथा विधि एवं न्याय के शब्द भी शामिल किए जा रहे हैं। यह पूर्णतया डिजिटल वेब आधारित होगा तथा इसे केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानकीकृत वर्तनी के अनुसार तैयार किया जा रहा है। इसमें यूनिकोड फॉन्ट का उपयोग किया जा रहा है तथा इसमें हिंदी, अंग्रेजी में टाइप कर शब्द खोजने की सुविधा होगी।

''बंटवारा मकान का''

कहानी

एम.एस.चौहान
उप प्रबंधक (सोलर), कासरगोड केरल

सेठ घनश्याम के दो पुत्रों में जायदाद और जमीन का बंटवारा चल रहा था, लेकिन एक चार बेडरूम के घर को लेकर विवाद गहराता जा रहा था। एक दिन दोनों भाई मरने मारने पर उतारू हो चले, तो पिता जी बहुत जोर से हँसे। अपने पिताजी को हँसता देखकर दोनों भाई लड़ाई को भूल गए और पिताजी से हँसी का कारण पूछा। पिताजी ने कहा– इस छोटे से जमीन के टुकडे के लिए इतना लड़ रहे हो, छोड़ो इसे, आओ मेरे साथ, एक अनमोल खजाना दिखाता हूँ मैं तुम्हें। पिता घनश्याम जी और दोनों पुत्र उनके साथ रवाना हुए।

पिताजी ने कहा, देखो यदि तुम आपस में लड़े तो फिर मैं तुम्हें उस खजाने तक नहीं लेकर जाऊँगा और बीच रास्ते से ही लौटकर आ जाऊँगा। अब दोनों पुत्रों ने खजाने के चक्कर में एक समझौता किया कि चाहे कुछ भी हो जाए पर हम लड़ेंगे नही, प्रेम से यात्रा पर चलेंगे। गाँव जाने के लिए एक बस मिली, पर सीट दो ही खाली थी और वो तीन थे, अब पिताजी के साथ थोड़ी देर पवन बैठे तो थोड़ी देर मदन। ऐसे चलते–चलते लगभग दस घंटे का सफर तय किया, तब गाँव आया। घनश्याम जी दोनों पुत्रों को लेकर एक बहुत बड़ी हवेली पर गए। हवेली चारों तरफ से सुनसान थी। घनश्याम जी ने देखा कि हवेली में जगह–जगह कबूतरों ने अपना घोंसला बना रखा है, तो वे वहीं बैठकर रोने लगे। पुत्रों ने पूछा, क्या हुआ पिताजी आप रो क्यों रहे हैं? रोते हुए उस वृद्ध पिता ने कहा, जरा ध्यान से देखो इस घर को, जरा याद करो वो बचपन जो तुमने यहाँ बिताया था, तुम्हें याद है, बच्चों इसी हवेली के लिए मैंने अपने बड़े भाई से बहुत लड़ाई की थी, ये हवेली तो मुझे मिल गई, पर मैंने उस भाई को हमेशा के लिए खो दिया, क्योंकि वो दूर देश में जाकर बस गया और फिर वक्त बदला, एक दिन हमें भी ये हवेली छोड़कर जाना पड़ा। अच्छा, तुम यह बताओ बेटा कि जिस सीट पर हम बैठकर आये थे, क्या वो बस की सीट हमें मिल गई? और यदि मिल भी जाती तो क्या वो सीट हमेशा–हमेशा के लिये हमारी हो जाती? मतलब कि उस सीट पर हमारे सिवा और कोई न बैठ सकता।

दोनों पुत्रों ने एक साथ कहा कि ऐसे कैसे हो सकता है, बस की यात्रा तो चलती रहती है और उस सीट पर सवारियाँ बदलती रहती हैं। पहले हम बैठे थे, आज कोई और बैठा होगा और पता नहीं, कल कोई और बैठेगा और वैसे भी उस सीट में क्या रखा है, जो थोड़ी सी देर के लिये हमारी है।

पिताजी पहले हँसे और फिर आँखों में आँसू भरकर बोले, देखो यही मैं तुम्हें समझा रहा हूं कि जो थोड़ी देर के लिए तुम्हारा है, तुमसे पहले उसका मालिक कोई और था, थोड़ी सी देर के लिए तुम हो और थोड़ी देर बाद कोई और हो जाएगा। बस बेटा एक बात ध्यान रखना कि इस थोड़ी सी देर के लिए कहीं तुम अपने अनमोल रिश्तों की आहुति न दे देना, यदि पैसों का प्रलोभन आये तो इस हवेली की स्थिति को देख लेना कि अच्छे–अच्छे महलों में भी एक दिन कबूतर अपना घोंसला बना लेते हैं। बेटा मुझे यही कहना था कि बस की उस सीट को याद कर लेना जिसकी रोज सवारियां बदलती रहती हैं, उस सीट की खातिर अनमोल रिश्तों की आहुति न दे देना। जिस तरह से बस की यात्रा में तालमेल बिठाया था बस वैसे ही जीवन की यात्रा में भी तालमेल बिठाते रहना।

दोनों पुत्र पिताजी का अभिप्राय समझ गए और पिता के चरणों में गिरकर रोने लगे।

पत्थरों के शहर में कच्चे मकान कौन रखता है...
हवा के लिए घर में रोशनदान कौन रखता है...!
अपने आंगन की कलह से फुर्सत मिले तो सुने...
आजकल पराई दीवार पर कान कौन रखता है...!
हर चीज मुहैया है मेरे शहर में किश्तों पर...
अपनी हसरतों पर लगाम कौन रखता है...!
बहलाकर छोड़ आते हैं वृद्धाश्रम में मां बाप को...
अब इस दौर में पुराना सामान कौन रखता है...!
सबको दिखता है दूसरों में इक बेईमान इंसान...
खुद के भीतर मगर अब ईमान कौन रखता है...!!

आइए! लखनऊ घूमते हैं!

दर्शनीय

सिमरन शाहीन
कार्यपालक प्रशिक्षु (मा.सं.), ऋषिकेश

प्रिय पाठकों, आज आपको इस यात्रा वृतांत (ट्रेवल ब्लॉग) के माध्यम से लखनऊ के बारे में बताती हूँ, जो कि अपनी नज़ाकत, तहज़ीब व ऐतिहासिक स्मारकों के लिए देश भर में मशहूर है व आकर्षक पर्यटन स्थल है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ प्राचीन कोसल राज्य का हिस्सा था। यह भगवान राम की विरासत थी जिसे उन्होंने अपने भाई लक्ष्मण को समर्पित कर दिया था, अतः इसे लक्ष्मणवती, लक्ष्मणपुर व लखनपुर के नाम से जाना गया, जो बाद में बदलकर लखनऊ हो गया। नवाबों के शहर लखनऊ के कोने–कोने में ऐतिहासिक विरासत भव्य पार्क, धार्मिक स्थल देखने को मिल जायेंगे। इसी वजह से यह हर साल देश दुनिया से लाखों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। प्रमुख शहरों में से एक होने के कारण यह शहर सड़क मार्ग, वायुमार्ग व रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है। आप किसी भी माध्यम से लखनऊ पहुंच सकते हैं और टैक्सी से शहर के किसी भी स्थल तक आसानी से पहुंच सकते हैं व सांस्कृतिक, कला, ऐतिहासिक इमारतों के संगम के शहर का आनंद उठा सकते हैं। कुछ प्रमुख स्थल जहाँ आप घूम कर शहर के मनोरम दृश्यों, बाग़ बगीचों, इमारतों का लुत्फ़ उठा सकते हैं, उनका उल्लेख नीचे दिया गया है:

बड़ा इमामबाड़ा:

चारों तरफ हरे भरे बगीचे से घिरा ऐतिहासिक व स्थापत्य इमारतों में से एक सबसे मशहूर पर्यटन स्थल बड़ा इमामबड़ा है, इस स्मारक का निर्माण वर्ष 1784 ईस्वी में अवध क्षेत्र के नवाब आसफउद्दौला द्वारा कराया गया था। बड़ा इमामबड़ा को भूल–भुलैया के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यहाँ अन्दर जाने के लिए लगभग 1000 मार्गों का जाल है लेकिन बाहर निकलने के लिए सिर्फ दो मार्ग है। इसमें छत पर जाने के लिए 84 सीढ़ियां हैं जो ऐसे मार्ग से होकर जाती है, जो कि पर्यटकों को भ्रम में डाल देती हैं। इस अद्भुत स्थापत्य कला की विरासत के झरोखे भी अत्यधिक आकर्षक हैं बड़ा इमामबड़ा की खासियत है कि यह इमारत बिना लोहे के इस्तेमाल के बनाई गई है और भूलभुलैया की दीवारें खोखली बनाई गयी है जिससे एक तरफ की आवाज़ दूसरी तरफ आसानी से सुनी जा सकती है। यहाँ यह भी कहना उचित होगा कि दीवारों के भी कान होते हैं, बड़ा इमामबड़ा सुबह 09:00 बजे से शाम 05:00 बजे तक खुला रहता है। सोमवार को यहां साप्ताहिक अवकाश होता है।

रूमी दरवाजा:

आकर्षक स्मारकों में से एक रूमी दरवाजा है, जो कि अपनी एक अलग पहचान रखता है। इसे नवाब आसफउद्दौला ने अपने शासनकाल 1784–1786 के दौरान बनवाया था। अद्भुत वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध इस 60 फ़ीट ऊंची इमारत को तुर्किश गेटवे भी कहा जाता है। रूमी दरवाजा को लखनऊ शहर के प्रतीक चिन्ह के रूप में अपनाया गया है। इसे आज राजधानी की सिंग्नेचर बिल्डिंग या हस्ताक्षर भवन के नाम से जाना जाता है। यह भवन अपनी उत्कृष्ट नक्काशी व बनावट के कारण दुनिया में अपनी अलग पहचान रखता है।

लखनऊ का चिड़ियाघर:

102 साल पुराना यह चिड़ियाघर, देशी–विदेशी वन्यजीवों के कारण हर साल लगभग 10 लाख पर्यटकों को आकर्षित करता है जो कि 72 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। जिसमें अनेक प्रकार के जीव–जन्तु और लगभग 1000 से ज्यादा जानवर हैं जिनमे रॉयल बंगाल टाइगर, एशियाई हाथी, ज़ेबरा, काला हिरन सहित अनेक जानवर हैं। हरियाली

से घिरे इस चिड़ियाघर में टॉय ट्रेन भी है। जिससे आप पूरे चिड़ियाघर का आनंद ले सकते हैं। अलग–अलग प्रजातियों के जीव–जन्तुओं को देखने के लिए चिड़ियाघर प्रसिद्ध है। यहां आप सुबह 08:30 बजे से शाम 05:00 बजे तक जा सकते हैं। यहां पर सोमवार को साप्ताहिक अवकाश रहता है।

अंबेडकर मेमोरियल पार्क:

गोमती नगर में स्थित भव्य पर्यटक स्थल जो कि शहर का प्रमुख आकर्षक बिंदु है। इस पार्क का निर्माण गुलाबी पत्थरों से किया गया है, जो कि चाँद की रोशनी में अद्‌भुत छटा बिखेरता है। इस आकर्षक भव्य पार्क का निर्माण 2008 में उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री कुमारी मायावती के द्वारा करवाया गया था। इस पार्क में आकर्षक फाउंटेन, पत्थर से बनाये गए हाथी व संग्रहालय हैं। यह इमारत भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. भीम राव अंबेडकर को समर्पित है।

माता चन्द्रिका देवी मंदिर:

लखनऊ शहर से उत्तर दिशा में करीब 30 कि.मी. दूर प्रकृति की गोद में निर्मित चन्द्रिका देवी मंदिर, दुर्गा माता के एक रूप चन्द्रिका माता से संबंधित है। नवरात्र के समय यहाँ भव्य मेले का आयोजन भी होता है, श्रद्धालुओं के आस्था का प्रतीक माता चन्द्रिका देवी के मंदिर के पास से निकली गोमती नदी की जल धाराएं मंदिर की तीनों दिशाओं से प्रवाहित होती है। मंदिर के पास में एक तालाब है, जहाँ भगवान शिवजी की प्रतिमा है, आस्था के प्रतीक इस मंदिर में श्रद्धालु, देश के कोने–कोने से दर्शन के लिए आते हैं।

छतर मंजिल:

ऐतिहासिक धरोहरों की भूमि लखनऊ के कैसरबाग़ में छतर मंजिल स्थित है। इस मंजिल का नाम नवाब सआदतअली खान ने अपनी माँ छतरकुंवर के नाम पर रखा था। इस महल के नाम के अनुसार इमारत के ऊपर एक विशाल छतरीनुमा है जो कि दूर से नज़र आ जाती है। आप इस भवन का लुत्फ प्रत्येक दिन सुबह 08.00 बजे से शाम 06.00 बजे तक उठा सकते हैं। यहां पर रविवार को साप्ताहिक अवकाश रहता है।

जनेश्वर मिश्र पार्क:

गोमतीनगर एक्सटेंशन में स्थित अत्यधिक आकर्षक व मनोरम यह पार्क एशिया का सबसे सुंदर उद्यान माना जाता है। 376 एकड़ में स्थित इस उद्यान का उद्‌घाटन 05 अगस्त 2014 में किया गया। इस पार्क में पेड़ पौधे, जॉगिंग ट्रैक, गोल्फ कोर्स, ओपन जिम, साथ ही साथ बच्चों के लिए शानदार झूले भी मौजूद हैं जो कि पर्यटकों के लिए आर्कषण का केन्द्र है। प्रत्येक दिन आप सुबह 05:00 बजे से रात 09:00 बजे तक इस पार्क का आनंद ले सकते हैं।

इन सब आकर्षक स्थलों के अलावा भी लखनऊ में और भी जगह हैं, घूमने के लिए। जिनमे मरीनड्राइव, साइंस सिटी, आनंदी वॉटरपार्क, लूलूमॉल आदि है।

सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ,
जिंदगी गर कुछ रही तो ये जवानी फिर कहाँ।।

ख़्वाजा मीरदर्द

हिंदी के प्रति राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचार...

- राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।
- हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय–हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है।
- हिंदुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहां हो ही नहीं सकता।
- हिंदी भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।
- अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता–समझता है और हिंदी इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है।
- राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।

''बैटर ऑप्शन''

शीला देवी
कनिष्ठ अधिकारी (पुनर्वास), देहरादून

कहानी

नौकरी संबंधित कार्य से लगभग हर रोज दिल्ली जाना होता है। वापसी पर मुरथल के एक ढाबे पर रात्रिभोज हेतु रुकता हूं। खाने का मेन्यू सेट है। हाफ दाल, 3 रोटी, 1 प्लेट सलाद, 1 कटोरी मक्खन,........ और आखिर में खीर। लगभग हर रोज एक व्यक्ति मेरी टेबल पर आता है। मैं उसे वही मेन्यू बताता हूं। बीते कुछ दिनों से वह मुझसे पूछने की जहमत भी नहीं करता। मैं बैठता हूं......सलाद परोस देता है और फिर एक–एक कर बाकी सामग्री ले आता है। कल रात मैं ढाबे पर आकर बैठा। चिर–परिचित बंधु जो हर रोज ऑर्डर लेता था, वह कहीं दिखाई न दिया।

मेरी नज़रें उसे तलाश रही थी। इतने में एक नौजवान लड़का टेबल पर आया और बोला ''भोला भईया नहीं आए हैं सर। उनका तबियत खराब था। मुझे नहीं पता था कि जिस व्यक्ति को मैं रोज खाने का ऑर्डर देता हूं उसका नाम ''भोला'' है। ''आपका क्या नाम है? ''मैंने सामने खड़े नवयुवक से पूछा। हमारा नाम आकास है।'' उसने फट से जवाब दिया। मुरथल के ढ़ाबों पर अधिकतर कर्मचारी बिहारी हैं। नवयुवक का आका' 'श'' को आका ''स'' कहना मुझे खला नहीं। लड़का टिप टॉप था। सधी हुई कद काठी। तेल से चुपड़े कंघी किए हुए बाल। सबसे बड़ी बात उसके जूते चमक रहे थे। लग रहा था कि पालिश किए गए हैं। मैंने अपना मैन्यू बताने की शुरुआत की ही थी कि उसने मेरी बात काटते हुए कहा......पता है सर। हरा सलाद.... दाल .....मक्खन ....रोटी....खीर। मैंने उसकी ओर देखा.....मुस्कुराया .....और कहा.....'' पता है तो ले आईए। भूख के मारे जान निकल रही है।''

वह किचन की ओर चला गया। कुछ ही समय बाद वापिस आया। बोला .....'' सर। डोंट माइंड। एक बैटर ऑप्शन है। ''मैं एक क्षण .... अवाक रह गया। डोंट माइंड ....बैटर ऑप्शन......मेरे समाने ढाबे का एक वेटर खड़ा था या किसी मैनेजमेंट इंस्टिट्यूट से एम.बी.ए. मैनेजर खड़ा था। शक्ल देखकर तो लग न रहा था कि उसे अंग्रेजी का 'ए' भी आता होगा। मैं हतप्रभ था। ''क्या बैटर ऑप्शन है सर।'' मैंने व्यंग्यात्मक लहजे में पूछा। लड़के ने मेन्यू कार्ड उठाया। बोला ......'' आप वेज थाली लीजिए सर। इसमें दाल है। दो सब्जी है। पुलाव है। सलाद है और मीठा में खीर भी है ....और सर ......ये थाली आपको आपका मेन्यू के मुकाबले बीस परसेंट सस्ता पड़ेगा।'' लड़का एक सांस में कह गया। पहले ....''डोंट माइंड ......बैटर ऑप्शन ''.....यानी अंग्रेजी .....और फिर ''20 परसेंट'' यानी मैथेमेटिक्स। अबे कौन है ये लड़का। ध्यान से देखा तो वाकई बिल में बीस परसेंट का अंतर भी था। उम्र के 42 बसंत देख चुका हूं। खत पढ़ लेता हूं मजमून .....लिफाफा खोले बिना। ''क्या करते हो?'' मैंने प्रश्नवाचक निगाहों से उससे पूछा। ''यहीं काम करते हैं।'' उसने जवाब दिया। ''इसके अलावा क्या करते हो?'' मैंने पूछा।

''यूपीएससी की तैयारी कर रहे हैं सर। दिन में दिल्ली रहते हैं। ढाबा पर नाइट ड्यूटी करता हूं।'' आत्मविश्वास भरी आवाज़ में उसने जवाब दिया। ''बैटर ऑप्शन ले आओ।'' मैंने मुस्कुराते हुए कहा। खाना खाया। बिल टेबल पर था और आकाश......नहीं–नहीं ..... आका''स'' सामने खड़ा था। एक लम्बे अर्से बाद मैंने किसी वेटर को टिप नहीं दी। वह टिप देने लायक व्यक्ति नहीं था। मेरे पास पार्कर का एक पेन था। मैंने उसकी शर्ट की जेब में वह पेन लगा दिया। उसकी आँखों की चमक देखने लायक थी। एक वर्ग है.......जो बेशक घोर गरीबी में जी रहा है। दाने–दाने का मोहताज है। रोज कुआं खोद रोज पानी पी रहा है......लेकिन फिर भी अपने लिए ....बैटर ऑप्शन खोज रहा है। बेहतर विकल्प खोज रहा है। यह वर्ग दिन में किताबों में मुंह दिए सपनों की लड़ाई लड़ रहा है और रात में ढाबे पर खाना परोसता सर्वाइवल की लड़ाई लड़ रहा है। ....और जीतता भी यही वर्ग है क्योंकि इसके पास हारने को कुछ भी नहीं है और जीतने को पूरी दुनिया। मैं कल रात भविष्य के एक ''प्रशासनिक अधिकारी'' को पेन भेंट कर आया हूं। परिस्थिति जितनी भी विकट हो, संघर्ष जारी रखना ही ''बैटर ऑप्शन'' है।

एक राष्ट्र एक चुनाव

लेख

जितेन्द्र सिंह चन्देल
कनिष्ठ अभियंता (मा.सं.–प्रशासन विभाग)
टीएचडीसी इंडिया लि. ऋषिकेश

एक देश एक चुनाव से तात्पर्य लोकसभा तथा राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने से संबंधित है। हमारा देश लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ तरीके से अपनाने वाला देश है। लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं भारत में प्राचीन काल से विद्यमान रही है।

जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 एक महत्वपूर्ण कानून है जो भारत के चुनावी परिदृश्य को आकार देता है। लोकसभा व राज्यों की विधानसभाओं की सीटों का आबंटन, मतदाताओं की योग्यता और मतदाता सूची की तैयारी के लिए अधिनियमित किया गया है। भारत में चुनाव कराने की जिम्मेदारी चुनाव आयोग की है जो कि भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, लोकसभा, राज्यसभा तथा राज्यों की विधानसभाओं के लिए चुनाव करवाता है। वर्ष 1951–52 से 1967 तक लोकसभा और राज्यसभाओं के निर्वाचन अधिकांशतः साथ–साथ कराये गये थे। इसके पश्चात यह चक्र टूट गया और एक वर्ष के भीतर विभिन्न समय पर चुनाव होते रहते हैं। चूँकि भारत राज्यों का संघ है। हर राज्य की पृथक विधानसभा होती है जिसका कार्यकाल 5 वर्ष होता है। वर्तमान में भारत में 28 राज्य 8 केन्द्र शासित प्रदेश हैं। अतः प्रत्येक वर्ष 5–6 राज्यों में चुनाव होता है।

वर्तमान में केंद्र सरकार द्वारा एक राष्ट्र एक चुनाव के लिए एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया है, जिसके अध्यक्ष पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद हैं। आठ सदस्यीय समिति में केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह, नेता प्रतिपक्ष श्री अधीर रंजन चौधरी, गुलाम नबी आजाद, 15वें वित्त आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री एन. के. सिंह, संविधान विशेषज्ञ श्री सुभाष कश्यप, हरीश साल्वे व संजय कोठारी हैं।

एक राष्ट्र एक चुनाव के पक्ष में तर्क–

1. चुनाव आयोग एक चुनाव के बाद दूसरे चुनाव की तैयारियों में लग जाता है, क्योंकि कहीं न कहीं चुनाव होते रहते हैं, जिससे चुनाव आयोग चुनाव सुधार प्रक्रिया पर ध्यान नहीं दे पाता तथा चुनाव सुधार बहुत दिनों से लंबित है। चुनाव आयोग, चुनाव की घोषणा करने से लेकर, मतदान करवाना, मतदाता सूची तैयार करवाना, पूरी चुनाव की व्यवस्था–मंथन करना, निगरानी रखना तथा गिनती कराने के बाद निर्णय देना आदि शामिल हैं। पूरे सरकारी तंत्र का चुनाव में शामिल हो जाना, सामान्य मूल कर्त्तव्यों से भिन्न कार्य में लग जाना है।

2. भारत लोकतांत्रिक देश के साथ धार्मिक देश भी है, जहाँ विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों के लोग साथ–साथ रहते हैं। कुछ पार्टियां विशेष धर्म व सम्प्रदाय के लोगों को अपने वोट के लिए बढ़ावा देती हैं। नतीजन चुनाव के समय साम्प्रदायिक माहौल बिगड़ने का डर बना रहता है। फलस्वरूप केन्द्रीय बलों की तैनाती राज्यों में चुनाव के समय कर दी जाती है, जिससे केन्द्रीय बल सीआरपीएफ, एसआरपीएफ आदि साल भर चुनाव कराने में व्यस्त रहती हैं जो कि अपनी गुणवत्ता–स्किल डेवलपमेंट पर ध्यान नहीं दे पाती हैं।

3. चूँकि भारत राज्यों का संघ है, जहाँ पर राज्यों में भी केन्द्र की योजनायें कार्यान्वित होती हैं। हर वर्ष 5–6 राज्यों में आचार संहिता लागू होने से इन राज्यों में आचार संहिता लागू होती है। विभिन्न कल्याणकारी व विकासवादी योजनाएं प्रभावित होती हैं तथा चुनाव बाद ही लागू हो पाती हैं।

4. लोकसभा के चुनाव के पृथक राज्यों के चुनाव में भी सरकारी मशीनरी के लगने से कार्य बाधित होते

हैं। राज्यों में चुनाव में अधिक धन का व्यय होता है, जिसकी कीमत हमें अपने विकास कार्यों को लंबित कर चुकानी पड़ती है। अगर राज्यों के विधानसभा चुनाव भी लोकसभा चुनाव के साथ ही संपन्न कराये जाते हैं तो धन की बचत होगी तथा सरकारी तन्त्र को भी आराम रहेगा।

5. बार–बार चुनाव होने से व्यावसायिक एवं विकास गतिविधियाँ सुस्त हो जाती हैं जिससे अर्थव्यवस्था पर विपरीत असर पड़ता है। मतदाता भी एक बार में मतदान करके चुनावी मौसम से मुक्त होकर अपने काम पर ध्यान दे सकेगा। एक बार चुनाव होने से प्रवासी भारतीय जो दूसरे राज्यों में अपनी रोजी रोटी के लिए जाते हैं, एक चुनाव में अपने घर आकर मतदान भी कर सकेंगे जिससे मतदान का प्रतिशत बढ़ जायेगा, क्योंकि बार–बार चुनाव होने से गरीब मतदाता बार–बार यात्रा का खर्च नहीं उठा सकता। पाँच साल में एक बार चुनाव होने पर वह अधिक मतदान कर सकेगा।

6. राजनीतिक पार्टियां चंदे से चलती हैं। बार–बार चुनाव होने से उन्हें धन की आवश्यकता होती है। अतः पार्टियां बड़ी मात्रा में धन का दुरूपयोग करती हैं, एक राष्ट्र एक चुनाव होने से इस धन के प्रवाह पर अंकुश लगाया जा सकता है, क्योंकि बार–बार धन की आवश्यकता समाप्त हो जायेगी।

7. इलैक्टोरल बॉण्ड राजनीतिक पार्टियों को चुनावी धन संदेहास्पद तरीके के धन एकत्र करने की जगह साफ–सुथरा कानूनी तरीका है। यह मामला अभी सर्वोच्च न्यायालय में सवैंधानिक पीठ के समक्ष लंबित है। इलैक्टोरल बाण्ड जारी करने से सरकार की देनदारी बढ़ती है। बार–बार चुनाव होने से बार–बार भारतीय स्टेट बैंक से बॉण्ड जारी करने पड़ते हैं। एक साथ चुनाव कराने से बार–बार बॉण्ड जारी करने की प्रक्रिया से मुक्ति मिल सकती है।

8. हर वर्ष चुनाव होने से केन्द्रीय जाँच एजेंसियां तथा रक्षा बल, पुलिसकर्मी, आदि व्यस्त रहते हैं। जाँच एजेंसियों मुख्य कार्यों से अलग कार्यों में व्यस्त रहने के कारण मूल कर्त्तव्यों को देरी से करती हैं, जिससे अन्य खतरों की आशंका बढ़ जाती है। एक राष्ट्र एक चुनाव होने से जाँच एजेंसियां, केन्द्रीय बल, पुलिस प्रशासन, शासन, पुलिस आदि एक बार में चुनाव सम्पन्न कराकर अपने मूल कार्यों को कर सकते हैं।

इस प्रकार एक देश एक चुनाव कई आयामों में देश हित में प्रभावी कदम साबित होगा, जिससे देश के धन की बचत, सरकारी मशीनरी का बार–बार प्रयोग रूकेगा, विकास व कल्याणकारी योजनाओं को गति मिलेगी। वित्तीय अनियमितताओं में कमी आयेगी। चुनाव में खर्च पर कमी आयेगी। बार–बार चुनाव होने से होने वाली साम्प्रदायिक घटनाओं में कमी आयेगी। मतदान प्रतिशत बढ़ने से लोगों की भागीदारी लोकतंत्र में बढ़ेगी तथा अपने को सरकार से जोड़ पायेगी। एक राष्ट्र एक चुनाव, एक बहुप्रतीक्षित चुनावी सुधार है जिसकी देश को अत्यंत आवश्यकता है।

दिलचस्प तथ्य

- भारत दुनिया में चाय का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
- भारत में दुनिया का सबसे बड़ा फिल्म उद्योग मुंबई है।
- भारत दूध का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
- विश्व में सबसे अधिक डाकघर भारत में है।
- जैन और बौद्ध धर्म की स्थापना भारत में हुई थी।
- चांद के दक्षिणी ध्रूव पर पहुंचने वाला भारत सबसे पहला देश है।
- चन्द्रमा पर पानी की खोज भारत ने की थी।
- भारत में पहला रॉकेट साईकल पर ले जाया गया था।

नागराजा-पौराणिक महत्व

अश्वनी आनंद
(वरिष्ठ अभियंता, एम.पी.एस)
एवं राघवेंद्र श्रीवास्तव (प्रबंधक, एम.पी.एस), ऋषिकेश

नागराजा एक संस्कृत शब्द है जो कि नाग तथा राजा से मिलकर बना है अर्थात नागों का राजा। कद्रू और कश्यप ऋषि के संतान के रूप में नागों का जन्म हुआ था। मुख्य रूप से नागों के तीन देवताओं के नाम आते है – शेषनाग, तक्षक तथा वासुकी। अनन्त, तक्षक तथा वासुकी तीनों भाई महर्षि कश्यप, तथा उनकी पत्नी कद्रू के पुत्र थे जो कि सभी नागों के जनक माने जाते हैं।

शेषनाग भगवान विष्णु के भक्त हैं एवं नागों का मित्रतापूर्ण पहलू प्रस्तुत करते हैं। भगवान विष्णु जब क्षीरसागर में योगनिद्रा में होते हैं तो अनन्त उनका आसन बनते हैं तथा उनकी यह मुद्रा अनन्तशयनम् कहलाती है। अनन्त ने अपने सिर पर पृथ्वी को धारण किया हुआ है। उन्होंने रामायण काल में भगवान विष्णु के राम अवतार के समय राम के छोटे भाई लक्ष्मण तथा महाभारत काल में भगवान विष्णु के कृष्ण अवतार के समय कृष्ण के बड़े भाई बलराम के रूप में अवतार लिया। इसके अतिरिक्त रामानुज तथा नित्यानन्द भी उनके अवतार माने जाते हैं।

छोटे भाई वासुकी भगवान शिव के भक्त हैं, भगवान शिव हमेशा उन्हें गर्दन में धारण करते हैं। तक्षक नागों के खतरनाक पहलू को प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि उनके जहर के कारण सभी उनसे डरते हैं। मान्यता है कि महाभारत–काल में जब पांडवों के पौत्र परीक्षित राज कर रहे थे तो तक्षक ने ही उनको डसा था, जिससे उनकी मौत हो गई थी।

गुजरात के सुरेंद्रनगर जिले के थानगढ़ तहसील में नाग देवता वासुकी का एक प्राचीन मंदिर है। तमिलनाडु के जिले के नागरकोइल में नागराज को समर्पित एक मंदिर है। इसके अतिरिक्त एक अन्य प्रसिद्ध मन्दिर मान्नारशाला मन्दिर केरल के अलीप्पी जिले में है। इस मन्दिर में अनन्त तथा वासुकि दोनों के सम्मिलित रूप में देवता हैं। केरल के तिरुअनन्तपुरम् जिले के पूजाप्पुरा में नागराज को समर्पित एक मन्दिर है। उत्तराखंड में नागराजा रूप के दो प्रसिद्ध मंदिर है।

सेममुखेम नागराज - सेममुखेम नागराज उत्तराखण्ड के टिहरी गढ़वाल जिला में स्थित एक प्रसिद्ध नागतीर्थ है। श्रद्धालुओं में यह सेम नागराजा के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें नागराज फन फैलाये हैं और भगवान कृष्ण नागराज के फन के ऊपर वंशी की धुन में लीन हैं। मंदिर में प्रवेश के बाद नागराजा के दर्शन होते हैं। मंदिर के गर्भगृह में नागराजा की स्वयं भू–शिला है। ये शिला द्वापर युग की बतायी जाती है। मन्दिर के दाँयी तरफ गङ्गु रमोला के परिवार की मूर्तियाँ स्थापित की गयी हैं। सेम नागराजा की पूजा करने से पहले गङ्गु रमोला की पूजा की जाती है। यह माना जाता है कि इस स्थान पर भगवान श्री कृष्ण कालिया नाग का उद्धार करने आये थे।

डांडा नागराजा - डांडा नागराजा मंदिर पौड़ी शहर से लगभग 45 किलोमीटर की दूरी पर अदवानी–बगानीखाल मार्ग पर पड़ता है। गढ़वाल क्षेत्र में भगवान कृष्ण जी के अवतारों में से एक नागराजा, देवशक्ति की सबसे ज्यादा मान्यता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जब भगवान कृष्ण को यह क्षेत्र अत्यधिक पावन एवं सुन्दर लगा तो उन्होंने नाग का रुप धारण कर भूमि पर लेट–लेट कर इसकी परिक्रमा की। वैसे तो देव नागराजा का मुख्य धाम उत्तरकाशी के सेममुखेम में है पर कहा जाता है कि सेममुखेम और यह मंदिर दोनों एक समान ही हैं।

प्राणायाम के लाभ

स्वास्थ्य परिचर्चा

(21 जून-योग दिवस पर विशेष)
दैनिक जागरण में प्रकाशित लेख से प्रेरित

योग मनुष्य के स्वस्थ रहने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, योग की महत्ता को विश्वस्तर पर स्वीकार करते हुए प्रति वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। योगिक क्रियाओं में से एक प्राणायाम में अपनी सांसों पर नियंत्रण करने की कोशिश की जाती है। प्राणायाम करने से सेहत से जुड़े कई लाभ प्राप्त होते हैं। यह एक ऐसी प्रक्रिया है,जिसमें अपनी सांसों पर अपना ध्यान केंद्रित करना होता है। इसमें अलग–अलग तरीकों से और भिन्न–भिन्न समय के लिए अपनी सांसों पर नियंत्रण करने की कोशिश की जाती है, जो सेहत के लिए काफी लाभदायक होती है। इससे मिलने वाले लाभों के कारण इसे पश्चिमी देश भी धीरे–धीरे अपना रहे हैं। प्रतिदिन प्राणायाम करने से निम्नलिखित लाभ प्राप्त हो सकते हैं:–

अच्छी नींद

आजकल की भाग–दौड़ वाली जिंदगी में चैन से सोना किसी उपलब्धि से कम नहीं है। नींद पूरी न होने की वजह से सेहत से जुड़ी कई समस्याएं हो सकती हैं, जिनका खामियाजा आगे चलकर उठाना पड़ सकता है। प्राणायाम इस परेशानी को दूर करने में मदद करता है। प्राणायाम करने से शरीर को आराम मिलता है, जिससे नींद अच्छी आती है। इसलिए रोज 05 मिनट प्राणायाम करना काफी फायदेमंद हो सकता है।

फेफडों के लिए लाभदायक

प्राणायाम करने से फेफड़ों को मजबूत बनाने में काफी मदद मिलती है। प्राणायाम करते समय गहरी, लंबी सांसे लेनी होती हैं, जिससे फेफड़ों में मौजूद हर एल्वियोली तक ऑक्सीजन पहुंचती है और फेफड़े के मसल्स भी मजबूत बनते हैं। एल्वियोली वह जगह है जहां फेफड़े और रक्त सांस लेने और छोड़ने की प्रक्रिया के दौरान ऑक्सीजन और कार्बन डाइऑक्साइड का आदान–प्रदान करते हैं। हवा से सांस में ली गई ऑक्सीजन एल्वियोली से होकर रक्त में जाती है और पूरे शरीर में ऊतकों तक जाती है। कार्बन डाइऑक्साइड शरीर के ऊतकों से रक्त में यात्रा करती है और एल्वियोली से होकर साँस के जरिए बाहर निकलती है। इसलिए स्वस्थ फेफड़ों के लिए प्राणायाम करना काफी फायदेमंद होता है।

ब्लड प्रेशर कम करने में मददगार

हाई ब्लड प्रेशर की वजह से हार्ट अटैक, स्ट्रोक का खतरा होता है। ब्लड प्रेशर अधिक होने की वजह से और भी अनेक समस्याएं हो सकती हैं। इस कारण से ब्लड प्रेशर नियंत्रित करने में प्राणायाम करना काफी जरूरी होता है। प्राणायाम करने से शरीर को आराम मिलता है, जिससे ब्लड प्रेशर नियंत्रित करने में काफी मदद मिलती है।

तनाव कम करने में मददगार

लाइफस्टाइल की कई आदतों की वजह से कई लोगों के साथ स्ट्रेस बढ़ने की समस्या होती है। इस कारण से सेहत से जुड़ी कई परेशानियां हो सकती हैं। दिल की बीमारी, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर जैसी कई समस्याएं हो सकती हैं। तनाव कम करने में प्राणायाम काफी मददगार होता है। इसकी मदद से नर्वस सिस्टम को काफी आराम मिलता है, जिससे तनाव कम करने में मदद मिलती है।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक

प्राणायाम करते वक्त सारा ध्यान अपनी सांसों पर लगाना होता है। इसलिए इस दौरान आप अपनी सांसों के लिए ज्यादा जागरूक होते हैं, जिस कारण से माइंडफुलनेस बढ़ाने में सहायता मिलती है। यह एक प्रकार से मेडिटेट करने का तरीका भी होता है, जो मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है।

राजभाषा विभाग द्वारा जारी
राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	क्षेत्र	पत्राचार का अपेक्षित प्रतिशत	
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	'क' क्षेत्र	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	100%
			2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	100%
			3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	65%
			4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100%
		'ख' क्षेत्र	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	90%
			2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	90%
			3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	55%
			4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90%
		'ग' क्षेत्र	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	55%
			2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र का	55%
			3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	55%
			4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	55%

अन्य मदें

क्र.सं	अन्य मदें	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
2.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
3.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
4.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
5.	हिंदी में डिक्टेशन/की–बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
6.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
7.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
8.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
9.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रानिक उपकरणों जिनमें कम्प्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
10.	वेबसाइट द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
11.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%

क्र.सं	अन्य मदें	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
12 (i)	मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(ii)	मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(iii)	विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
13.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 02 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही 01 बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही 01 बैठक)		
14.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
15.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।		

राज्यों का वर्गीकरण-क्षेत्रवार

हिंदी बोले और लिखे जाने की प्रधानता के आधार पर देश के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को नीचे दिए अनुसार तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है–

क-क्षेत्र	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़
ख-क्षेत्र	गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र, दादरा एवं नगर हवेली, दमन दीव
ग-क्षेत्र	'क' और 'ख' क्षेत्र में भाामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र

कविता

हिंदी हूं मैं...

यशवंत सिंह नेगी
कनि. अधिकारी (हिंदी), खुर्जा

हिंदी हूं मैं, मां सरस्वती की वीणा का मधुर राग हूं मैं।
बच्चों की वाणी पर नव सृजित अंकुरित अनुराग हूं मैं।।

पाश्चत्य सभ्यता के प्रभाव को स्वाहा करती आग हूं मैं।
पर तिरस्कारों से भरी संकीर्णताओं का परित्याग हूं मैं।।

निज सभ्यता–संस्कृति के स्तम्भ का ठोस आधार हूं मैं।
महापुरूषों की दिव्य वाणी का आलौकिक विचार हूं मैं।।

हिंदी हूं मैं, मां सरस्वती की वीणा का मधुर राग हूं मैं।
बच्चों की वाणी पर नव सृजित अंकुरित अनुराग हूं मैं।।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक एकत्व की सूत्रधार हूं मैं।
मां के निश्छल मातृत्व भरे हृदय में प्रेम का सार हूं मैं।।

शीतल सरिता की अविरल बहती हुई जल धारा हूं मैं।
भंवर में फंसती हुई राष्ट्र चेतना का एक किनारा हूं मैं।।

अथाह विषय–ज्ञान के सागर की निश्छल गागर हूं मैं।
भारत–वर्ष की सभी भाषाओं का विशाल भंडार हूं मैं।।

हिंदी हूं मैं, मां सरस्वती की वीणा का मधुर राग हूं मैं।
बच्चों की वाणी पर नव सृजित अंकुरित अनुराग हूं मैं।।

सभ्य सनातन संस्कृति की एक अमिट पहचान हूं मैं।
विचारों की अभिव्यक्ति का सहज–सरल सोपान हूं मैं।।

आरंभ तो करें हिंदी लेखन, स्वेत कागज की सतह पर।
मां सरस्वती के दिव्य ज्ञान से होगा सवेरा नव पथ पर।।

हिंदी हूं मैं, मां सरस्वती की वीणा का मधुर राग हूं मैं।
बच्चों की वाणी पर नव सृजित अंकुरित अनुराग हूं मैं।।

कविता

रिटायरमेंट

कैलाश चन्द्र उनियाल
उप–महाप्रबंधक (भू–विज्ञान), ऋषिकेश

कभी एक क्षण भी बेकार नहीं की जीवन में,
अब रिटायरमेंट में खाली बैठने का
मजा ही कुछ और है।
ना जागने का झंझट न सोने की जल्दी,
रख अलार्म टांड पर,
अब सोने का मजा ही कुछ और है।
शरीर को हमेशा एक्सरसाइज करके,
फिट रहने की थी जरूरत,
अब आराम फरमाने का मजा ही कुछ और है।
हमेशा सिक लीव और पेड लीव में ही जिए,
और छुट्टी को तरसे अपनों के साथ रहने को,
अब जब अकेले हैं और सब बिजी,
तब मुक्ति से जीने का मजा ही कुछ और है।
हमेशा यस–सर, यस–सर कहने की आदत थी,
अपने मन की बात ना कह सके कभी,
अब अपनी बात खुलकर कहने का मजा
ही कुछ और है।
कभी ट्रांसफर के डर से
कभी शराफत की वजह से,
कभी सीनियर के कारण तो कभी माहौल के कारण,
न कह सके जो बातें वो कहने का
अब मजा ही कुछ और है।
बीते हुए साल वापस तो ना मिलेंगे कभी,
छूटे हुए साथ वापस तो ना मिलेंगे कभी,
लेकिन अब रिटायरमेंट में
मुस्कुराने का मजा ही कुछ और है।

कविता

मेरा सफर

दवनीत कौर
कार्यपालक प्रशिक्षु, टिहरी

कौन है जो मेरी सुनेगा
मन में कहना,
ये गुनाह थोड़ा होगा.......

इस बंद कमरे में,
किससे कहूं.....
किताबों से, जिसका हर एक पन्ना कुछ नया कहता है
इससे पूछुं क्या?
अपनी नई कहानी के बारे में......

या इस घड़ी से
जिसे बस आगे ही बढ़ना है,
मेरी तरफ पलट कर देखने को, बोलूं क्या?
मैं तो कबसे यहीं हूं....
हाँ!!
आज भी......

शायद सुकून इस खिड़की के पास हो,
जहाँ चार दीवारों में कैद होके भी
बाहर का शोर सुनायी देता है।

ये रात का अँधेरा,
सिर्फ मुझे ही जगाता है क्या?
वो उम्मीद भरी माँ की निगाहें,
ये जरूर उसका कमाल है।

इन सबसे दोस्ती करना सही होगा क्या?
सुकून का महँगा ख्वाब जो देखा है....

वक्त को जाया नहीं करते,
किताबें बुला रही हैं.....

उम्मीदों को कायम रखना है,
शोर में गूंजता हुआ नाम
अपनी माँ को सुनाना है!!!

कविता

समर्पित अर्धांगिनियों का त्याग

सिद्धार्थ कौशिक
प्रबंधक, प्रचालन एवं अनुरक्षण, टिहरी

मैं आयी जीवन में बनकर आधा तुम्हारा हिस्सा,
गाएं पर्वत गीत तुम्हारे कहाँ है मेरा किस्सा!

अनुचरी बन, बन प्रेम बावरी,
देखी बजरी सीमेंट डामरी,
चारों ओर थी धूल भरी,
दिखता बस लोहा–लोहा,
क्या ये सब वो हैं कि जिन्होंने,
था मेरा मन मोहा–मोहा,
तुम और बस थी चिंता तुम्हारी,
जिसमें चली यह नाव बेचारी।

जो आयी जीवन में बनकर आधा तुम्हारा हिस्सा,
गाएं पर्वत गीत तुम्हारे कहां है मेरा किस्सा!

सुना है तुमने नदी को मोड़ा,
भारी भरकम शिला को तोड़ा,
काट किसी को अलग किया,
और अनगिनत कणों को तुमने जोड़ा,
पर क्या तुमने ये देखा कि,
कब–कब मेरे हृदय को तोड़ा,
काम तुम्हारा सौत हमारी,
नयन हमारे वारि–वारि,

जो आयी जीवन में बनकर आधा तुम्हारा हिस्सा,
गाएं पर्वत गीत तुम्हारे कहां है मेरा किस्सा!

तीज मनायी बिना तिहारे,
विरह अगन अंग जर गए सारे,
प्रणय सिलल पर बैठी सौत,
कैसी प्रतिदिन देखी मौत,
करे प्रकट इस क्रूर पीड़ को,
कौन लेखनी मिस प्रद्योत,
फिर भी हर दिन भाव दबाए,
घर में तुम्हारे दीप जलाए,

जो आयी जीवन में बनकर आधा तुम्हारा हिस्सा,
गाएं पर्वत गीत तुम्हारे कहां है मेरा किस्सा!

कविता

बचपन की यादें

जी.पी.नौटियाल
उप अधिकारी, केन्द्रीय संचार, ऋषिकेश

मेरी आँखों से गुजरी,
बीते लम्हों की परछाई,
न फिर रोके रूकी ये आँखें,
झट से भर आईं।
बचपन गुज़रा था जो,
घर के आंगन में लुढ़कता सा,
मैं भीगा करता था जिसमें,
वो सावन बरसता सा,
याद आई मुझे,
मां ने थी जो कभी लोरियां गाई,
न फिर रोके रूकी ये आँखें,
झट से भर आई।
उम्र थी छोटी पर सपने,
हम बड़े देखा करते थे,
ये दुनिया प्यारी न थी,
हम तो बस खिलौनों पर मरते थे,
जब देखा मैंने वो बचपन का खजाना,
किताब, कलम और स्याही,
न फिर रोके रूकी ये आँखें,
झट से भर आईं।
याद आया मुझे,
भाई–बहनों के संग झगड़ना,
शैतानियां कर माँ के,
दामन से जा लिपटना,
साथ याद आई वो बातें,
जो माँ ने थी समझाई,
न फिर रोके रूकी ये आँखें,
झट से भर आई।
आज तन्हाई में जब,
वो मासूम बचपन नज़र आया,
ऐसा लगता है जैसे खुशियों ने,
कोई गीत गुनगुनाया।
जब दिखा सच्चाई का आईना,
तो फिर हुई रूसवाई,
न फिर रोके रूकी ये आँखें,
झट से भर आई।
पल–पल याद आती है,
मधुर बचपन तेरी,
हजारों यादें भरी है,
ऐ बचपन तेरी,
जब तू निर्णय संसार था मेरा,
नादान बचपन में छुआछूत किसने जानी,
हर वक्त बस खेलने की ठानी।
बचपन में हवाओं से बातें किया करते थे,
चाँद तारों पर जाने के सपने संजोया करते थे,
उस कटी पतंग के पीछे दूर तक भागना,
हाथ न आये तब भी खुशी से नाचना,
ज्यों ही याद आए पल,
न फिर रोके रूकी ये आँखें,
झट से भर आई।

जानकारी

''राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना''

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा मौलिक रूप से हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने एवं राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से **''राजभाषा गौरव पुरस्कार''** दिए जाते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2022–23 से संशोधित ''राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना'' लागू की गई है। इस योजना के अंतर्गत अब भारत के नागरिकों को निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगेः–

(क) हिंदी में ज्ञान–विज्ञान संबंधी मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

(ख) न्यायालयिक विज्ञान, पुलिस, अपराधशास्त्र अनुसंधान और पुलिस प्रशासन पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

(ग) संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर आदि पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

(घ) विधि के क्षेत्र में हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

इस पुरस्कार योजना की जानकारी राजभाषा विभाग की वेबसाइट **www.rajbhasha.gov.in** पर उपलब्ध है।

कविता

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की महत्ता

सिद्धार्थ कौशिक
प्रबंधक, प्रचालन एवं अनुरक्षण, टिहरी

हमने देखा है ख्वाबों को उड़ान भरते हुए,
मखमली हाथों से चट्टान को बिखरते हुए।
सोचा किसी ने भी नहीं तब भी नहीं कल भी नही,
आज वो हो गया था जो सोच की सीमा के परे,
बरसे अब चारों तरफ कैसे बोलूँ हैं न हरफ,
पर्वतों की गोद में जब मृत्यु थी लहराने लगी।
टिहरी का वो मोड़ था जहाँ रूक गई, वो प्रलय,
नही रूकती तो जाने कैसा नज़ारा होता,
हमने देखा है ख्वाबों को उड़ान भरते हुए,
मखमली हाथों से चट्टान को बिखरते हुए।
धर्म को जब थी पड़ी एक जरूरत वो बड़ी,
मेघ थे भूल गए, भूला था टिहरी न कभी,
द्वार सब खोल दिए, सेवकों ने बोल दिए,
गंगा बहती रही भरपूर पानी खुद में लिए,
जिसका था विरोध हुआ वो ही अपना था बना,
मुश्किलों के सामने वो था खड़ा पर्वत सा तना,
हमने देखा है ख्वाबों को उड़ान भरते हुए,
मखमली हाथों से चट्टान को बिखरते हुए।
धरती पैदा अन्न करे सभी जीवों को धरे,
कैसे पानी बिना जीवन की कल्पना भी करें,
लाखों गले तर ये करे खेतों को जीवन से भरे,
टिहरी के बिना कोई ये कल्पना भी कैसे करे,
अंधेरा जो छाए तो टिहरी ही उबारा है करे,
मर चुके तारों में जब प्राण एक फूंक भरे,
हमने देखा है ख्वाबों को उड़ान भरते हुए,
मखमली हाथों से चट्टान को बिखरते हुए।
आज दौर और ही है जाओ जहाँ घुटता है दम,
इस कठिन वक्त में भी हम किसी से भी नहीं कम,
शक्ति सूरज से बढ़ी हवा भी पीछे न खड़ी,
इनकी ताकत को सजाने की भी टिहरी को पड़ी,
बैटरी मेगा बनी तब नया आग़ाज़ दिखा,
नाम कामयाबी का आकाश में टिहरी है लिखा,
हमने देखा है ख़्वाबों को उड़ान भरते हुए,
मख़मली हाथों से चट्टान को बिखरते हुए।
नही रूके ख़्वाब यहाँ चलें उड़ें चाहे जहाँ
चलो इस बार कुछ नया ही कर दिखाते हैं,
खेल में भी देश मेरा अब न पीछे है खड़ा,
जल में नौका त्वरण की जोत लो जलाते हैं,
भागीरथी आरती कर माँ को हम प्रसन्न करें,
जल स्पर्धा के भावी बीजों का सृजन लो करें,
हमने देखा है ख़्वाबों को उड़ान भरते हुए,
मख़मली हाथों से चट्टान को बिखरते हुए।

जानकारी

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के ई-लर्निंग कार्यकलाप

(क) राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण संस्थान–केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान ने आवश्यकतानुसार इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफार्मों (ई–प्रशिक्षण) के माध्यम से भी हिंदी भाषा/हिंदी टंकण/हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षण देना प्रारंभ कर दिया है।

(ख) राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों ने आवश्यकतानुसार डिजिटल प्लेटफार्मों (ई–निरीक्षण) के माध्यम से भी वर्चुअल निरीक्षण करना प्रारंभ कर दिया है।

(ग) हिंदी कार्यशालाओं और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की बैठकों का आयोजन सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के साधनों (ई–बैठक) के माध्यम से भी किया जा रहा है।

(घ) केंद्र सरकार के विभिन्न संगठनों की गृह पत्रिकाओं के सहज तथा सुलभ पठन के लिए राजभाषा विभाग की आधिकारिक वेबसाइट **www.rajbhasha.gov.in** पर ई–पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म की शुरुआत की गई है।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

फरवरी 13, 2024 को विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य डॉ. यतीन्द्र कटारिया की उपस्थिति में हिंदी नोडल अधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री ईश्वर दत्त तिग्गा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.–स्थापना), श्री एस. बी. प्रसाद, उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) सहित अनेक वरि. अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यशाला का शुभारंभ डॉ. कटारिया के संबोधन के साथ हुआ। इस अवसर पर श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में राजभाषा कार्यान्वयन पर चर्चा की।

जून 12, 2024 को नराकास हरिद्वार के तत्वावधान में रेल विकास निगम लिमिटेड के सौजन्य से ऋषिकेश एवं पर्वतीय क्षेत्र में स्थित सदस्य संस्थानों के कर्मचारियों के लिए एक संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कनिष्ठ अभियंता स्तर के अधिकारियों ने प्रतिभागिता की। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री अजीत सिंह यादव, मुख्य महाप्रबंधक (परि.), रेल विकास निगम के संबोधन के साथ हुआ। कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लि. के श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री संतोष टेलकीकर, सहा. प्रबंधक (राजभाषा) ने व्याख्यान दिया।

टिहरी एवं कोटेश्वर यूनिट

फरवरी 28, 2024 को टिहरी एवं कोटेश्वर यूनिट के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), डॉ. ए. एन. त्रिपाठी, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री डी.पी. पात्रो, संकाय सदस्य, पूर्व वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, श्री डी. एस. रावत एवं हिंदी अनुभाग के अधिकारियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यशाला में श्री रावत एवं श्री इन्द्र राम नेगी, प्रबंधक (राजभाषा) ने व्याख्यान दिया।

जून 06, 2024 को टिहरी एवं कोटेश्वर यूनिट के अधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), डॉ. ए. एन. त्रिपाठी, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री डी. पी. पात्रो, संकाय सदस्य, डॉ. संजीव नेगी एवं हिंदी अनुभाग के अधिकारियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यशाला में डॉ. संजीव नेगी एवं श्री इन्द्र राम नेगी, प्रबंधक (राजभाषा) ने व्याख्यान दिया।

खुर्जा एसटीपीपी

खुर्जा एसटीपीपी में 22 मार्च, 2024 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर श्री अमरेन्द्र कुमार विश्वकर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (मा. सं. एवं प्रशा.) सहित अनेक वरि. अधिकारी उपस्थित थे। कार्यशाला में उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–गाजियाबाद, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहायक निदेशक, श्री अजय चौधरी ने व्याख्यान दिया।

खुर्जा एसटीपीपी में 22 जून, 2024 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर श्री कुमार शरद, कार्यपालक निदेशक (परि.), श्री अमरेन्द्र कुमार विश्वकर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (मा सं. एवं प्रशा.) सहित अनेक वरि. अधिकारी उपस्थित थे। कार्यशाला में उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–गाजियाबाद, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहायक निदेशक, श्री अजय चौधरी ने व्याख्यान दिया।

वीपीएचईपी, पीपलकोटी

वीपीएचईपी पीपलकोटी में 17 जनवरी, 2024 एवं 18 जनवरी, 2024 को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ श्री अजय वर्मा, मुख्य महाप्रबंधक (परि.) ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यशाला में संकाय सदस्य श्री डी.एस. रावत, पूर्व वरि. हिंदी अधिकारी ने व्याख्यान दिया। इस अवसर पर परियोजना के अनेक वरि. अधिकारी उपस्थित रहे। 29 जून, 2024 को आयोजित की गई हिंदी कार्यशाला में श्री संतोष टेलकीकर, सहा. प्रबंधक (रा.भा.) ने व्याख्यान दिया।

एनसीआर कार्यालय

मार्च 13, 2024 को एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री आर. एस. तोमर के साथ अनेक वरि. अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यशाला में नराकास, गाजियाबाद के सचिव, श्री ललित भूषण, राजभाषा अधिकारी, बीएसएनएल ने अधिकारियों व कर्मचारियों को नए प्रौद्योगिकी टूल्स के प्रयोग की जानकारी दी।

विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों के द्वारा राजभाषा निरीक्षण

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार के अधिकारियों ने 28 मार्च, 2024 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया। इस निरीक्षण कार्यक्रम की अगुवाई विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों श्री कर्मचन्द, निदेशक (ईसी, ईटी एवं राजभाषा), एवं सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री सुशील कुमार ने की। निरीक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ के अवसर पर श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक), टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड ने विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों का पुष्प गुच्छ एवं शॉल भेंट कर स्वागत किया।

इस अवसर पर श्री शैलेन्द्र सिंह ने कहा कि इस प्रकार के निरीक्षण से विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों एवं टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के राजभाषा अधिकारियों के मध्य आपसी संबंध मज़बूत होंगे जिससे कि राजभाषा कार्यान्वयन को निगम में और बेहतर ढंग से लागू करने में मदद करेगी। श्री सिंह ने हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए अवगत कराया कि हिंदी भाषा का अधिक से अधिक उपयोग निगम के सभी कर्मचारियों के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हर कर्मचारी को अपने सरकारी कार्यों और कर्तव्यों में हिंदी को प्राथमिक भाषा के रूप में स्वीकार करना चाहिए। यह उनके अनुसार हिंदी को बढ़ावा देने और राष्ट्र निर्माण में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

निरीक्षण कार्यक्रम में कारपोरेट कार्यालय की ओर से श्री वीर सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री नरेश सिंह, सहायक अधिकारी (हिंदी) एवं श्रीमती हेमलता कौर, कनिष्ठ अधिकारी (अनुवाद) उपस्थित रहे। विद्युत मंत्रालय के अन्य अधिकारी, श्रीमती मीनू, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, श्री सौरव ठाकुर, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी एवं सुश्री मेधना भी उपस्थित रही।

निरीक्षण के दौरान विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों के समक्ष टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की ओर से श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा निगम में राजभाषा से संबंधित

क्रियाकलापों पर प्रस्तुतीकरण दिया गया। विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों ने टीएचडीसी में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रशंसा करते हुए कहा कि टीएचडीसी ने इस क्षेत्र में अनेक अभिनव प्रयास किए हैं। उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन में वृद्धि करने हेतु अनेक सुझाव भी दिए।

कोटेश्वर यूनिट

मार्च 31, 2024 को कोटेश्वर यूनिट का राजभाषा निरीक्षण किया गया। कोटेश्वर यूनिट की ओर से डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री डी.पी. पात्रो, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री इन्द्र राम नेगी, प्रबंधक (राजभाषा) एवं सुश्री बाणी शुक्ला, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने निरीक्षण बैठक में भाग लिया।

खुर्जा एसटीपीपी

विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों ने 07 मई, 2024 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया। विद्युत मंत्रालय की निरीक्षण टीम में मंत्रालय के श्री सुशील कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री अनिल कुमार, कनि. अनुवाद अधिकारी, श्री विनय वर्मा शामिल थे। खुर्जा एसटीपीपी की ओर से निरीक्षण बैठक में श्री कुमार शरद, कार्यपालक निदेशक (परियोजना), श्री वीर सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री आर.एम. दूबे, महाप्रबंधक, श्री अमरेन्द्र विश्वकर्मा, वरि. प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री वाई.एस. नेगी, कनि. अधिकारी (हिंदी) के साथ अनेक वरि. अधिकारी उपस्थित थे।

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों ने 24 मई, 2024 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के एनसीआर कार्यालय, कौशांबी का राजभाषा निरीक्षण किया। विद्युत मंत्रालय की निरीक्षण टीम में मंत्रालय के श्री कर्मचन्द, निदेशक (ईसी, ईटी, ईवी एवं राजभाषा) तथा श्री सुशील कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा) शामिल थे। एनसीआर कार्यालय कौशांबी की ओर से निरीक्षण बैठक में श्री आर. एस. तोमर, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री रोहित जोशी, उप प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री के. सूर्यामोली, श्री आशीष जैन, कनि. अधिकारी (हिंदी) सहित अनेक वरि. अधिकारी उपस्थित थे।

टिहरी यूनिट

विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों ने 29 मई, 2024 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की टिहरी यूनिट का राजभाषा निरीक्षण किया। विद्युत मंत्रालय की निरीक्षण टीम में मंत्रालय के श्री सुशील कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री अंजल कुमार विनय, वरि. अनुवाद अधिकारी एवं श्री सौरव ठाकुर, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी शामिल थे। टिहरी यूनिट की ओर से श्री एल.पी. जोशी, कार्यपालक निदेशक (टीसी), डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री इन्द्र राम नेगी, प्रबंधक (राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री आर.डी. मंमगाई, उप प्रबंधक (पीआर), सुश्री बानी शुक्ला, सहा. प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्रीमती नीरज सिंह, सहा. अधिकारी (राजभाषा) सहित अनेक वरि. अधिकारी उपस्थित थे।

वीपीएचईपी, पीपलकोटी

विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों ने 31 मई, 2024 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की वीपीएचईपी यूनिट का राजभाषा निरीक्षण किया। विद्युत मंत्रालय की निरीक्षण टीम में मंत्रालय के श्री सुशील कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री अंजल कुमार विनय, वरि. अनुवाद अधिकारी एवं श्री सौरव ठाकुर, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी शामिल थे। वीपीएचईपी पीपलकोटी की ओर से श्री जे. एस. बिष्ट, अपर महाप्रबंधक (प्रभारी) (यांत्रिक, सा. एवं पर्या.), श्री अनूप कुमार श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक (वित्त), श्री वी.डी. भट्ट, वरि. प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री वाई. एस. चौहान, श्री अविनाश कुमार (का. प्रशा.) सहित अनेक वरि. अधिकारी उपस्थित थे।

भू-विज्ञान एवं भू-तकनीकी मासिक चल राजभाषा शील्ड से सम्मानित

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 13 फरवरी, 2024 को डॉ. यतीन्द्र कटारिया, माननीय सदस्य हिंदी सलाहकार समिति, विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार की गरिमामयी उपस्थिति में हिंदी नोडल अधिकारियों की विशेष बैठक आयोजित की गई। बैठक में अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री ईश्वर दत्त तिग्गा एवं उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) भी उपस्थित रहे। कारपोरेट कार्यालय में चल रही मासिक चल राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत राजभाषा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धियों के लिए सामाजिक एवं पर्यावरण विभाग को सम्मानित किया गया। इस शील्ड के पूर्व विजेता विभाग भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी के श्री हरीश उपाध्याय, उप महाप्रबंधक ने यह शील्ड सामाजिक एवं पर्यावरण विभाग के उप प्रबंधक, श्री प्रदीप घिल्डियाल को सौंपी। इस योजना की सराहना करते हुए डॉ. यतीन्द्र कटारिया ने अपने संबोधन में कहा कि

डॉ यतीन्द्र कटारिया की उपस्थिति में भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी विभाग से मासिक चल राजभाषा शील्ड प्राप्त करते सामाजिक एवं पर्यावरण विभाग के अधिकारी

इस प्रकार की प्रोत्साहन योजनाओं से राजभाषा के प्रचार–प्रसार को बल मिलता है। उन्होंने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रशंसा की।

सतर्कता विभाग मासिक चल राजभाषा शील्ड से सम्मानित

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 24 जून, 2024 को हिंदी नोडल अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री एस. बी. प्रसाद ने की। इस अवसर पर मासिक चल राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत राजभाषा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धियों के लिए सतर्कता विभाग को सम्मानित किया गया। इस शील्ड के पूर्व विजेता विभाग सामाजिक एवं पर्यावरण के अधिकारियों ने यह शील्ड सतर्कता विभाग के उप महाप्रबंधक, श्री जी.एस. चौहान एवं अन्य अधिकारियों को सौंपी।

सतर्कता विभाग के अधिकारी, सामाजिक एवं पर्यावरण विभाग के अधिकारी से मासिक चल राजभाषा शील्ड प्राप्त करते

हिंदी समन्वयकर्ता सम्मेलन का आयोजन

सम्मेलन में स्वागत संबोधन प्रस्तुत करते इंडियन ऑयल कारपोरेशन लि. बहादराबाद के प्रमुख, श्री कमल माहेश्वरी

नराकास, हरिद्वार के तत्वावधान में 06 जून, 2024 को समिति के सदस्य संस्थानों के राजभाषा अधिकारियों/हिंदी समन्वयकर्ता अधिकारियों के लिए इंडियन ऑयल कारपोरेशन लि. बहादराबाद के सौजन्य से हिंदी समन्वयकर्ता सम्मेलन का आयोजन होटल विस्तारा ग्रांड, हरिद्वार में किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता टीएचडीसी इंडिया लि. के श्री एस.बी. प्रसाद, उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। समिति के सचिव श्री पंकज कुमार शर्मा ने सभी उपस्थित अधिकारियों को नराकास हरिद्वार की नवीन गतिविधियों के बारे में अवगत कराया तथा उन्होंने भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा 2024–25 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम की प्रमुख मदों पर चर्चा की। कार्यक्रम में माननीय संसदीय राजभाषा समिति के समक्ष निरीक्षण के दौरान भरकर प्रस्तुत की जाने वाली प्रश्नावली में पुनरीक्षित बिंदुओं पर चर्चा की गई। श्री संतोष टेलकीकर, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर सूचना प्रबंधन प्रणाली में संस्थान का पंजीकरण कराने एवं तिमाही रिपोर्ट ऑनलाइन भरने के बारे में बताया। इस सम्मेलन में नराकास के 34 संस्थानों के अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे।

हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य डॉ यतीन्द्र कटारिया ''विद्यालंकार'' का टीएचडीसी के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश का दौरा

हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य डॉ यतीन्द्र कटारिया ''विद्यालंकार'' ने 25 जून, 2024 को कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश का दौरा किया। 26 जून, 2024 को श्री कटारिया ने राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में श्री एस.बी. प्रसाद, उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) एवं हिंदी अनुभाग के अधिकारियों से विचार–विमर्श किया। जिसमें श्री कटारिया को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में आयोजित किए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियों से अवगत कराया गया। श्री कटारिया ने टीएचडीसी में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसका श्रेय टीएचडीसी के शीर्ष अधिकारियों को जाता है जो कि टीएचडीसी के हिंदी अनुभाग का मार्गदर्शन कर रहे हैं तथा राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने में हर संभव प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने निगम में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री आर. के. विश्नोई एवं श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक) के राजभाषा कार्यान्वयन में अमूल्य योगदान के लिए एक प्रमाण पत्र भी प्रदान किया। इस अवसर पर श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) सहित हिंदी अनुभाग के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

डॉ यतीन्द्र कटारिया के द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में विचार–विमर्श किया गया एवं उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रमाण प्रदान किया गया

सत्यमेव जयते

हिन्दी सलाहकार समिति

विद्युत मंत्रालय भारत सरकार

दिनांक 25 जून 2024

प्रमाण पत्र

टीएचडीसी लिमिटेड

ऋषिकेश

टीएचडीसी में श्री राजीव विश्नोई जी अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक एवं श्री शैलेन्द्र सिंह जी निदेशक कार्मिक एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यनवयन समिति हरिद्वार के नेतृत्व में टीएचडीसी अपने राजभाषा कार्मिको के साथ राजभाषा हिन्दी के अनुपालन में पूर्ण कर्त्तव्य निष्ठा के साथ कार्य कर रहे हैं। एतदर्थ टीएचडीसी को राजभाषा के प्रति कर्त्तव्य निष्ठा के लिए यह प्रशस्ति प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

(डा. यतीन्द्र कुमार कटारिया)
सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति
विद्युत एवं विदेश मंत्रालय भारत सरकार
संयोजक विश्व हिन्दी मंच

हास-परिहास

टीचर - इतने दिन कहां थे, स्कूल क्यों नहीं आए?
भोलू - मैम, मुझे बर्ड फ्लू हो गया था।
टीचर - पर ये तो पक्षियों को होता है इंसानों को नहीं।
भोलू -आपने इंसान समझा ही कहां, रोज तो मुर्गा बनाती हो।

पति-तुम्हें मायके भेजा, फिर भी तुम वहां से भी मुझसे क्यों लड़ रही हो?
पत्नी - Work from home.

रेल में महिला बार–बार बेटे से कह रही थी, जल्दी से खा ले बेटा, नहीं तो हलवा बराबर बैठे अंकल को दे दूंगी। जब काफी देर हो गई तो अंकल बोले, मैडम जी जो भी फैसला करना है, जल्दी कीजिए, आपके हलवे के चक्कर में तीन स्टेशन आगे आ गया हूं।

किसी के किसी के साथ विचार नहीं मिलते तो इसका मतलब ये नहीं कि वो दुश्मन हैं। वे पति–पत्नी भी हो सकते हैं।

टीचर- किसी ऐसी जगह का नाम बताओ जहां पर बहुत सारे लोग हों फिर भी तुम अकेला महसूस करो?
स्टूडेंट- एग्जामिनेशन हॉल।

मिंटू- कौन कहता है औरतें कभी अपनी गलती नहीं मानती हैं?
चिंटू- क्यों क्या हुआ?
मिंटू - मेरी बीवी तो रोज यही कहती है कि गलती हो गई तुमसे शादी की।

ट्रैफिक पुलिस-स्टॉप–स्टॉप तुम्हारी हेड लाइट्स काम नहीं कर रही, वो बंद हैं।
संता-जल्दी से हट जाओ, ब्रेक्स भी काम नहीं कर रही हैं।

पति–पत्नी में हो रहा झगड़ा पति के एक वाक्य से रुक गया। सुंदर हो इसलिए कुछ भी कहोगी क्या? इसके बाद पत्नी ने कुछ नहीं कहा और पति को चाय बिस्कुट भी दिया। याद रखिए हमें रोग से लड़ना हैं, रोगी से नहीं।

टीचरः लड़कियां अगर पराया धन होती हैं तो लड़के क्या होते हैं?
गप्पू- सर चोर होते हैं।
टीचर- वो कैसे?
गप्पू- क्योंकि चोरों की नज़र हमेशा पराये धन पर होती है।

पति- आज ऐसी चाय बनाओ कि पीते ही तन बदन झूमने लगे और मन नाचने लगे।
पत्नी- हमारे यहां भैंस का दूध आता है नागिन का नहीं।

बेटा- पापा मुझे बुलेट दिला दो।
पिता- नालायक, पड़ोसन की लड़की को देख बस से जाती है।
बेटा- यही तो देखा नहीं जाता...

अपने बेटे के रिपोर्ट कार्ड पर पिता ने अंगूठा लगाया
बेटा- पापा आप तो इंजीनियर हो, फिर ये अंगूठा क्यों?
पिता- हरामखोर तेरे मार्क्स देखकर टीचर को पता नहीं लगना चाहिए कि तेरा बाप पढ़ा लिखा है।

दामाद ने जीता ससुर का दिल - एक बार एक सास अपने 3 दामाद का प्यार देखने के लिए नदी में कूद गई, एक दामाद ने उसे बचा लिया, सास ने उसे तोहफे में मारुति कार दी, अगले दिन सास फिर कूद गई, दूसरे दामाद ने भी उसे बचा लिया, सास ने उसे तोहफे में मोटरसाइकिल दी, तीसरे दिन सास एक बार फिर कूदी तो तीसरे दामाद ने सोचा अब तो साइकिल ही मिलेगी, सो उसने नहीं बचाया और सास डूब गई लेकिन, दामाद को मर्सडीस मिली, कैसे? ससुर ने दी...

संपादक के नाम पाती

सेवा में, उप प्रबंधक, हिंदी अनुभाग, मुख्यालय, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश, महोदय, आपकी पत्रिका **''पहल''** (राजभाषा विशेषांक) दिनांक 11.03.2024 को प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्मिलित आलेख, कविताएं, समाचार आदि स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की दिशा में यह एक सराहनीय कदम है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए, इससे जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूं।

-डॉ. छबिल कुमार मेहेर,उप निदेशक (कार्यान्वयन),
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–2, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, गाजियाबाद।

महोदय, आपके कार्यालय की गृह पत्रिका **''पहल''** का 33वां अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सामग्री रोचक और ज्ञानवर्धक है। पत्रिका की साज–सज्जा भी उत्तम है। इसके लिए बधाई स्वीकार करें।

डॉ. सुनीता यादवः परामर्शदाता (राजभाषा), ऊर्जा दक्षता ब्यूरो।

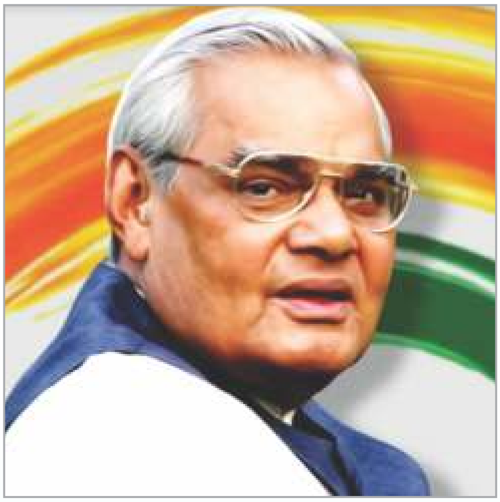

अटल बिहारी वाजपेयी

25 दिसंबर,1924 - 16 अगस्त, 2018

भरी दुपहरी में अँधियारा, सूरज परछाईं से हारा,
अंतरतम का नेह निचोड़ें, बुझी हुई बाती सुलगाएँ,
आओ फिर से दिया जलाएँ।

हम पड़ाव को समझे मंजिल, लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल,
वर्तमान के मोहजाल में आने वाला कल न भुलाएँ,
आओ फिर से दिया जलाएँ।

आहुति बाकी यज्ञ अधूरा, अपनों के विघ्नों ने घेरा,
अंतिम जय का वज्र बनाने नव दधीचि हड्डियाँ गलाएँ,
आओ फिर से दिया जलाएँ।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाषः 0135–2473614, वेबसाइटः http://www.thdc.co.in
श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा टीएचडीसी इंडिया लि. के लिए प्रकाशित
(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)

Contad